नई सोच, नया आयाम

RNI No. CHHHIN/2009/35020

जोहार छत्तीसगढ़

दैनिक हिन्दी

◆ वर्ष: -14 ◆ अंक: 231 डाक पंजीयन 030/रायगढ़/2015-2017 ◆ मूल्य: 3 ₹ ◆ पृष्ठ : 8 (4+4)

धरमजयगढ़, गुरुवार 30 जून 2022

पेज -3 पर

कोंटा नगर पंचायत में मंत्री कवासी लखमा ने लगाई सौगातों की ...

भारतीय जनता पार्टी प्रदेश के निर्देश पर जशपुर में त्रिदिवसीय...

पेज -8 पर

JOHAR CHHATTISGARH epaper for login www.joharchhattisgarh.in

एक नजर

डॉक्टर गिरफ्तार

नर्स से करता था छेड़छाड़, नोटिस के बाद भी नहीं सुधरा, फिर की गंदी हरकत तो हुआ गिरफ्तार

जांजगीर-चांपा। छत्तीसगढ़ में एक और डॉक्टर को छेड़छाड़ के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। जांजगीर-चांपा जिले में यह डॉक्टर कई दिनों से एक नर्स से छेड़छाड़ कर रहा था। प्रबंधन ने उसे नोटिस जारी भी किया था। मगर वह नहीं माना। एक बार फिर से उसने जब छेड़छाड़ की तो पीड़िता ने मामले की शिकायत पुलिस से कर दी और उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। मामला चांपा थाना क्षेत्र का है। चांपा के नए बस स्टैंड के पास NKH अस्पताल है। यहां डॉ.लेखचंद साहू(40) पदस्थ है। लेखचंद साहू पहले से शादीशुदा भी है। इस मामले में 40 साल की पीड़ित नर्स ने पुलिस से शिकायत की थी। पीड़ित नर्स भी शादीशुदा है। उसका पति किसी दूसरे जगह रहकर काम करता है। शिकायत में बताया गया कि 17 जून की रात को वह ड्यूटी पर तैनात थी। उस दौरान भी लेखचंद साहू ने उससे जबरदस्ती करने की कोशिश की। काफी विरोध करने पर भी वह नहीं मान रहा था। नर्स वहां से किसी तरह से भागने में कामयाब हुई थी।

कटकोना का मल्टीयूटिलिटी सेंटर स्वावलंबन की ओर महिलाओं का एक मजबूत कदमः मुख्यमंत्री

रायपुर। मूसलाधार बारिश के बाद भी भेंट-मुलाकात में लोगों का उत्साह कम नहीं हुआ है। भेंट-मुलाकात में आस-पास के ग्रामवासी मुख्यमंत्री के समक्ष अपनी बात रखने पहुंचे थे।

इस दौरान मूसलाधार बारिश होने लगी मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों से पूछा कि कार्यक्रम बंद करें या जारी रखे। ग्रामीणों ने पूरे उत्साह के साथ भेंट-मुलाकात जारी रखने की सहमति दी। मुख्यमंत्री ने भी बारिश में ग्रामीणों का उत्साह कम होने नहीं दिया। दरअसल मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल आज कोरिया जिले के मनेन्द्रगढ़ विधानसभा क्षेत्र के ग्राम कटकोना के ग्रामीणों से भेंट-मुलाकात कर रहे थे। इस दौरान मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल भेंट-मुलाकात अभियान के तहत आज मनेंद्रगढ़ विधानसभा के ग्राम कटकोना पहुंचे थे। भेंट-मुलाकात के पहले मुख्यमंत्री ने यहां 'कटकोना मल्टीयूटिलिटी सेंटर' का लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री ने इस दौरान बुधरा नदी पर लगभग 6 करोड़ 75 लाख रूपए की लागत से बनने वाले एनीकट निर्माण का भूमिपूजन किया। इस एनीकट के निर्माण से 33 गांव के 30 हज़ार से ज्यादा लोगों को सिंचाई, पेयजल और निस्तारी के लिए पानी की उपलब्धता होगी। यह मल्टीविलेज वाटर सप्लाई योजना के अंतर्गत बरदर जल प्रदाय समूह का हिस्सा है। उन्होंने चिरमिरी में लोगों की मांग एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए पॉलीटेक्निक कॉलेज और खड़गवां में स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोलने की घोषणा की।

20 साल पहले इलाज के लिए मेकाहारा गया पति आज तक नहीं लौटा, परिवार आज भी कर रहा इंतजार

जोहार छत्तीसगढ़-देवभोग।

20 साल पहले इलाज के लिए रायपुर के मेकाहारा अस्पताल गया नागलदेही का युवक अब तक घर नहीं लौटा इतना ही नहीं युवक का अब तक कोई पता भी नहीं चल सका पत्नी और परिवार के लोग आज भी इसी उम्मीद में जी रहे है कि कही उनके घर का मुखिया लौट आये।

मिली जानकारी के अनुसार आज से 19 साल पहले नागलदेही के मुकु यादव के ऊगली में बड़ा घाव हो गया था स्थानीय स्तर पर एक साल तक इलाज करवाने के बाद भी मुकु का घाव ठीक नहीं हुआ। दिन ब दिन दर्द बढ़ता जा रहा था और घाव भी बढ़ने लगा था उस दौरान परिवार ने देवभोग अस्पताल में मुकु का इलाज करवाया। इसके बाद बढ़ते घाव को देखकर उस दौरान पदस्थ देवभोग के डॉक्टर ने मुकु को इलाज के लिए रायपुर भेज दिया डॉक्टर के द्वारा रेफर किये जाने के बाद मुकु की पत्नी रेमती और उसकी लड़की गोपबाली मुकु को लेकर रायपुर के मेकाहारा के लिए रवाना हुए वहां उन्होंने मुकु को भर्ती करवाया इसके बाद इलाज भी शुरू हुआ चार दिनों तक इलाज करने के बाद वहां मौजूद कुछ लोगों ने पत्नी और बेटी को धमकाकर वहां से चले जाने को कहा, धमकी से डरकर दोनों मां और बेटी वहां से लौटकर घर वापस आ गए। मुकु की पत्नी का कहना है कि वे 18 साल तक पति का इंतजार करती रही कि वे लौट आएंगे लेकिन आज तक पति नहीं लौटे और ना ही उनका कोई खबर घर तक पहुंचा। यहां बताते चले कि मुकु का बेटा अशन यादव भी उनको खोजने राजधानी के मेकाहारा अस्पताल गया था। लेकिन उनकी कोई खोज खबर नहीं मिली पत्नी और परिवार को उम्मीद है कि मुकु कही से लौट आएंगे। पति का पता नहीं चला तो तोड़ा चूड़ी, रुंधे गले से मुकु की पत्नी कहती है कि जब बेटा

राजधानी से लौटकर आया और बताया कि पिता का पता नहीं चला तो इसके बाद रेमती ने अपने हाथों से अपना चूड़ी तोड़ी रेमती कहती है कि उन्होंने 18 साल तक पतिव्रता व्रत का पालन किया। इसके बाद उन्हें उनके बेटे की शादी भी करनी थी। समाज के बीच यह बात भी उठने लगी थी कि पति के नहीं होने से भी पतीव्रत का पालन वह क्यों कर रही है। ऐसे में जब बेटे ने आकर कह दिया कि पिता का पता नहीं चला तो इसके बाद रेमती ने खुद ही चूड़ी तोड़ने का फैसला लिया।

मजदूरी करके चार बच्चों का कर रही पालन-पोषण

रेमती ने बताया कि जब पति उनसे दूर हुए तो उस दौरान उनके ऊपर चार बच्चों की जिम्मेदारी था। वहीं रेमती के परिवार की आर्थिक स्थिति भी बहुत कमजोर था। ऐसे स्थिति में भी रेमती ने हार नहीं माना और मजदूरी करके चार बच्चों का लालन पालन किया। रेमती बताती है कि उसने काफी संघर्ष कर अपने चारों बच्चों को पाला है। स्वर्गीय समाजसेवी ने किया था बहुत ज्यादा प्रयास जनपद उपाध्यक्ष सुखचंद बेसरा ने बताया कि जब मुकु का एक साल तक कोई खोज खबर नहीं मिला तो स्वर्गीय समाजसेवी राजेश पाण्डेय ने अपने स्तर पर पहल करना शुरू किया। बेसरा के मुताबिक समाजसेवी ने कई जगह पत्र-व्यवहार किया। इसके बाद उसे ढूढ़ने मेकाहारा तक भी गए लेकिन वहां भी उनका कोई खबर नहीं मिला। जनपद उपाध्यक्ष ने बताया कि उन्होंने भी अपने स्तर पर कई बार मुकु को ढूढ़ने का प्रयास किया था लेकिन उन्हें भी कोई कामयाबी नहीं मिल सका।

प्रचार रथ को किया गया रवाना

जिले में करेगा जनसंख्या स्थिरीकरण पखवाड़े का प्रचार

रायपुर । जनसंख्या स्थिरीकरण पखवाड़े को लेकर जिले में प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता रथ को मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मीरा बघेल के द्वारा झंडी दिखाकर रवाना किया गया । जागरूकता रथ का उद्देश्य लोगों में जनसंख्या स्थिरीकरण को लेकर जागरूकता लाना और परिवार नियोजन के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में जानकारी देने के साथ-साथ परिवार नियोजन के स्थाई और अस्थाई साधनों के बारे में लोगों को जागरूक करना भी है ।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय के जिला मीडिया प्रभारी गजेन्द्र डोंगरे ने बताया इस रथ द्वारा सूचना शिक्षा संचार और पैंप्लेट के साथ सभी विकासखंडों में जा कर प्रचार करेगा । गर्भ निरोधक के अस्थाई साधनों की जानकारी सभी स्वास्थ्य संस्थाओं में कॉर्नर बनाकर दी जाएगी जहाँ पर कंडोम बॉक्स भी रखे गए हैं जो सभी के लिए निशुल्क उपलब्ध हैं ।

जहां-जहां कांग्रेस की सरकारें हैं, वहां सांप्रदायिक ताकतें सिर उठा रहीं

कन्हैया की हत्या के लिए गहलोत सरकार जिम्मेदार- डॉ. रमन सिंह

रायपुर। राजस्थान के उदयपुर में कन्हैया लाल की निर्मम हत्या ने पूरे देश को हिला कर रख दिया है। पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने इस पर गहलोत सरकार और कांग्रेस पर तीखा हमला बोला।

उन्होंने कहा कि घटना के लिए सीधे तौर पर राजस्थान की कांग्रेस सरकार जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि जहां-जहां कांग्रेस की सरकार होती है, वहां ऐसी घटनाएं होती है। चाहे वह राजस्थान हो या फिर छत्तीसगढ़..! ऐसी ताकतों के खिलाफ पूरे देश में आक्रोश है। ऐसी ताकतों पर कार्रवाई होनी चाहिए। छत्तीसगढ़ में ऐसी घटनाएं न हो इस पर ध्यान रखना होगा, क्योंकि प्रदेश में धर्मांतरण बढ़ रहा है और जातीय संतुलन बिगड़ रहा है। पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने कहा कि निर्ममता से दो युवक गले को काट देते हैं। हत्या के माध्यम से एक मैसेज देने का प्रयास किया गया है। सांप्रदायिक ताकतें कितना सिर उठा रही है। राजस्थान की सरकार को सब मालूम था। टेलर कन्हैया लाल ने इसकी शिकायत भी की थी कि उसको धमकी दी जा रही हैं। धमकी का कारण यह था कि नूपुर शर्मा के समर्थन में सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया था। उन्होंने थाने में अर्जी देकर संभावित हमले की आशंका जताई थी। इसके बाद भी कन्हैया लाल को न सुरक्षा दी गई और न किसी प्रकार के प्रबंध वहां की सरकार व पुलिस प्रशासन द्वारा किए गए।

ऐसी ताकतों के खिलाफ पूरे देश में आक्रोश

डॉ. रमन ने कहा कि राजस्थान और जहां-जहां कांग्रेस की सरकार है। ऐसी ताकतें अपना सिर उठा रही है। इनके ऊपर कोई प्रतिबंधित कार्रवाई मालूम होने के बाद भी नहीं करते। छत्तीसगढ़ के कवर्धा की घटना भी कुछ ऐसा है। लोग इसे अभी तक भूले नहीं है।

सार्वजनिक खेल मैदान पर कब्जा करने का सिलसिला जारी, प्रशासन मौन

जोहार छत्तीसगढ़-कुनकुरी।

जशपुर जिले में कुनकुरी का खेल मैदान जो कि 26 जनवरी 15 अगस्त से लेकर सभी सास्कृतिक कार्यक्रम इसी खेल मैदान में आयोजित किए जाते हैं। लेकिन मानो मैदान को ग्रहण सा लग गया है आए दिन खेल मैदान पर कब्जा करने का सिलसिला जारी है। लोग अपनी इच्छाओं के अनुरूप मैदान पर कब्जा करने में लगे हुए हैं हम आपको दिखाते हैं यह बिजली का खंभा जो की बताने के लिए काफी है कि घर पहले बना या बिजली विभाग के द्वारा खंभा पहले गड़वाया गया। लोग अतिक्रमण करने में इतने माहिर हो गए हैं की बिजली का

खंभा भी अपने घरों के अंदर समेट लिए हैं। और आए दिन कब्जा की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए खेल मैदान को निगलने में लगे हुए हैं। कुनकुरी का यह खेल मैदान खेल प्रेमियों को खून के आसूं रोने पर मजबूर कर दिया है। मैदान का साईज आए दिन छोटा होते जा रहा है और यह सब प्रशासन की नजर के सामने हो रहा है और प्रशासन मूकदर्सक बने खेल मैदान में कब्जा का खेल देखते आ रहा है। बहरहाल कुनकुरी खेल मैदान का कायाकल्प करने के लिए विधायक यूडी मिंज की पहल कारगर साबित होते दिख रही है। खेल मैदान की शासन-

प्रशासन के द्वारा प्रयास धनराशि जो कि खेल मैदान को संरक्षित और सुरक्षित करने में अहम भूमिका निभाने वाली है। देखना ये होगा कि इस खेल मैदान में कब्जा करने वाले कब्जा करने में सफल हो पाते हैं। या शासन के द्वारा कब्जा हटाकर खेल मैदान को संरक्षित और सुरक्षित करने में प्रशासन सफल हो पाती है।

आक्रोश... छत्तीसगढ़ में ट्रेनें बंद करने पर बढ़ा आक्रोश

जीएम के नाम चिटठी,कहा-ट्रेनों का संचालन शुरू कराएं नहीं तो आंदोलन

रायपुर। छत्तीसगढ़ में दर्जनों ट्रेनों के एक साथ बंद होने से हाहाकार की स्थिति है। इसको लेकर लोगों में नाराजगी बढ़ती जा रही है। इस बीच कांग्रेस के विधायक विकास उपाध्याय ने आंदोलन की चेतावनी दी है।

मुख्यमंत्री कर चुके रेल मंत्री से बात

इस मामले में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल खुद रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से फोन पर बात कर चुके हैं। सरकार की ओर से रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष को पत्र लिखकर आधिकारिक तौर पर आपत्ति दर्ज कराई जा चुकी है। इसके बाद भी रेल सेवा पूरी तरह बहाल होने के कोई संकेत रेलवे की तरफ से नहीं मिल रहे हैं।

उन्होंने रायपुर रेलवे स्टेशन पहुंचकर अफसरों को महाप्रबंधक के नाम एक चिट्ठी सौंपी। इस पत्र में उन्होंने बंद ट्रेनों को फिर से संचालित करने की मांग की है। विधायक विकास उपाध्याय और कांग्रेस के कई पदाधिकारी-कार्यकर्ता दोपहर बाद रायपुर रेलवे स्टेशन पहुंचे। प्रदर्शन की आशंका से वहां भारी संख्या में आरपीएफ, जीआरपी और स्थानीय पुलिस के जवानों को तैनात किया गया था। कांग्रेस नेताओं ने वहां प्रदर्शन नहीं किया।

उन लोगों ने स्टेशन पर सबसे वरिष्ठ अधिकारी के तौर पर मौजूद प्रभारी स्टेशन डायरेक्टर चंद्रशेखर महापात्रा से मुलाकात की। उन्होंने दक्षिण-पूर्व-मध्य रेलवे के महाप्रबंधक (GM) के नाम लिखी एक चिट्ठी सौंपी। इस चिट्ठी में ट्रेन बंद होने की वजह से हो रही असुविधाओं का हवाला देकर ट्रेनों का सुचारु संचालन शुरू करने की मांग की है। विधायक विकास उपाध्याय ने कहा, पिछले कुछ महीनों से लगातार ट्रेन कैंसिल हो रही है जिससे आम जनता को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

छत्तीसगढ़ की ही 66 से अधिक ट्रेनें प्रभावित

इस समय छत्तीसगढ़ की 66 से अधिक ट्रेनें विभिन्न वजहों से बंद हैं अथवा उनका रास्ता बदल दिया गया है। 36 ट्रेनों को कोयला संकट की वजह से बंद किया गया था। उनमें से पांच पटरी पर लौटी हैं। ये ट्रेनें दो महीनों से बंद हैं। उसके बाद स्टेशनों पर काम के नाम पर कई ट्रेनों को बंद कर दिया गया है। कुछ ट्रेनों का रास्ता बदला गया है।

शासकीय कार्यालयों में हितग्राहियों के काम आसानी से हों : मुख्यमंत्री

रायपुर। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने बैकुंठपुर के सर्किट हाउस में आयोजित समीक्षा बैठक में कहा कि शासकीय कार्यालयों में हितग्राहियों का काम आसानी से होना चाहिए। इसके लिए कार्यालयों में सकारात्मक वातावरण बनना चाहिए।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, शिक्षकों की उपस्थिति सुनिश्चित करें, जाति प्रमाण पत्र के कार्य नियमित रूप से हों। उपजातियों को भी प्रमाणपत्र मिलना चाहिए। तेंदूपत्ता का बोनस और पारिश्रमिक वितरण त्वरित रूप से किया जाना सुनिश्चित करें, जंगली जानवर हमले में क्षतिपूर्ति के मुआवजा के प्रकरण लंबित न रहें। मुख्यमंत्री ने जिले के अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक में शासकीय योजनाओं की प्रगति और क्रियान्वयन तथा आम जनता से संबंधित कार्यों की समीक्षा की। गृहमंत्री श्री ताम्रध्वज साहू, सांसद श्रीमती ज्योत्सना चरणदास महंत, संसदीय सचिव श्रीमती अम्बिका सिंहदेव एवं विधायक श्री गुलाब कमरो और मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव श्री सुब्रत साहू भी इस अवसर पर उपस्थित थे। मुख्यमंत्री ने बैठक में कहा कि अधिकारी-कर्मचारी शासन तंत्र का अभिन्न अंग हैं।

पार्टी की आउटसोर्सिंग और शिवसेना का 'होस्टाइल टेकओवर'?

महाराष्ट्र सियासत

शिवसेना को महज़ एक परिवार की पार्टी मान लेने वाले बड़ी भूल करते हैं। ज़मीन पर शिवसेना परिवार से ज़्यादा विचारधारा की पार्टी है।इसकी जड़ें मुंबई की शिवसेना शाखाओं में है जिसे बाल ठाकरे ने अपने विचारों से बनाया।

भारत की राजनीति में यह पहला मौक़ा नहीं है जब किसी पार्टी का 'होस्टाइल टेकओवर' करने की कोशिश की गई हो। 1969-70 में इंदिरा गांधी की कांग्रेस के टेकओवर की कोशिश एक तरह से नाकाम रही, मगर लगता है शिवसेना पहली पार्टी होगी जिसका 'शत्रुतापूर्ण अधिग्रहण' सफ़ल हो जाएगा। उद्धव ठाकरे ने अपनी साझा सरकार ही नहीं बल्कि शिवसेना पार्टी के फ़ैसले भी 'आउटसोर्स' कर दिए थे। दरअसल, एनसीपी चीफ़ शरद पवार ही असली सुप्रीमो बन गए थे। तो क्या यह एक तरह से शिवसेना पार्टी की ही आउटसोर्सिंग की कोशिश थी

राजनीति और सत्ता के कम अनुभवी उद्धव ठाकरे के लिए यह आरामदेह स्थिति थी। ख़ासकर तब जबकि उनकी टक्कर राजनीति की खूंख़ार पार्टी बीजेपी से हो गई थी। पवार और ठाकरे परिवार की नज़दीकियों की कुछ और वजहें भी बताई जाती हैं मगर वह निजी बातें हैं। दरअसल, शुरू में सत्ता का सुख सभी को अच्छा लगा, मगर धीरे-धीरे शिवसेना के स्थानीय मगर मज़बूत नेताओं को लगने लगा कि सुप्रीमो उद्धव नहीं पवार हैं। ऐसी तमाम बातें शिवसेना बाग़ी विधायक कह चुके हैं। शिवसेना को महज़ एक परिवार की पार्टी मान लेने वाले बड़ी भूल करते हैं। ज़मीन पर शिवसेना परिवार से ज़्यादा विचारधारा की पार्टी है। इसकी जड़ें मुंबई की शिवसेना शाखाओं में है जिसे बाल ठाकरे ने अपने विचारों से बनाया। बाल ठाकरे का वचन और उनकी विचारधारा में कभी कोई मतभेद नज़र नहीं आया, इसलिए शिवसैनिकों के लिए बाल ठाकरे महज़ एक चेहरा नहीं आकाशवाणी थे। शिवसेना में पहले भी छगन भुजबल और नारायण राणे जैसे बाग़ी हुए हैं - लेकिन 2022 की बग़ावत सत्ता ही नहीं बल्कि पूरी शिवसेना पार्टी हथियाने के लिए हुई है।

पार्टी के अधिग्रहण से आएगी सत्ता

साल 2019 में बीजेपी ने एनसीपी के बाग़ी अजीत पवार के साथ महाराष्ट्र की सत्ता पाने की नाकाम कोशिश की। अजीत, चाचा शरद पवार के पास पहुंच गए। बीजेपी से घबराए उद्धव ठाकरे और ग़ुस्साए शरद पवार ने समझदारी से सत्ता क़ायम कर ली, तब से लेकर आज तक बीजेपी ने कई तरह के दांव लगाए जिससे महाराष्ट्र में ठाकरे की साझा सरकार गिर जाए और शिवसेना के पास घर वापसी के अलावा कोई चारा न बचे। इस बीच मध्य-प्रदेश मॉडल से लेकर गोवा-मणिपुर-मेघालय मॉडल तक की चर्चा और कोशिशें हुईं, मगर फिर आइडिया के स्टाक मार्केट से 'टेकओवर' का विचार प्रकट हुआ।

'टेकओवर' के बाद ठाकरे मार्का

हालांकि बस चर्चा है - मगर इसके दो पहलू हैं। अगर एकनाथ शिंदे ग्रुप शिवसेना पार्टी पर क़ाबिज़ हो पाता है या अगर वो दूसरी शिवसेना भी खड़ी करते हैं तो उन्हें एक ठाकरे चेहरा चाहिए। राज ठाकरे वो चेहरा हैं जो नई शिवसेना को वैधता दे सकते हैं, तो क्या शिवसेना पार्टी के अधिग्रहण के बाद राज ठाकरे अपनी पार्टी स्ट्रक्चर का विलय कर देंगे? या फिर शिवसेना के बाग़ी विधायक राज ठाकरे की पार्टी में शामिल हो जाएंगे?

क्या राज ठाकरे का चेहरा उद्धव ठाकरे की शिवसेना का स्ट्रीट पावर ख़त्म कर सकता है? मगर क्या बीजेपी के ज़्यादा मज़बूत और अख्खड़ राज ठाकरे को पावरफुल बनाने का रिस्क लेगी? वैसे लोहे को लोहा ही काटता है और फिर उस लोहे को काटने के लिए एक नया लोहा लाया जा सकता है।

मनोज सिंह

संपादकीय

योग का विरोध क्यों?

मालदीव की राजधानी माले में एक अजीब-सा हादसा हुआ। 21 जून को योग-दिवस मनाते हुए लोगों पर हमला हो गया। काफी तोड़-फोड़ हो गई। कुछ लोगों को गिरफ्तार भी किया गया। मालदीव में यह योग-दिवस पहली बार नहीं मनाया गया था। 2015 से वहां बराबर योग-दिवस मनाया जाता है। उसमें विदेशी कूटनीतिज्ञ, स्थानीय नेतागण और जन-सामान्य लोग होते हैं। इन योग-शिविरों में देसी-विदेशी या हिंदू-मुसलमान का कोई भेद-भाव नहीं किया जाता है। इसके दरवाजे सभी के लिए खुले होते हैं। यह योग-दिवस सिर्फ भारत में ही नहीं मनाया जाता है। यह दुनिया के सभी देशों में प्रचलित है, क्योंकि संयुक्तराष्ट्र संघ ने इस योग-दिवस को मान्यता दी है। मालदीव में इसका विरोध कट्टर इस्लामी तत्वों ने किया है। उनका कहना है कि योग इस्लाम-विरोधी है। उनका यह कहना यदि ठीक होता तो संयुक्तराष्ट्र संघ के दर्जनों इस्लामी देशों ने इस पर अपनी मोहर क्यों लगाई है? उन्होंने इसका विरोध क्यों नहीं किया? क्या मालदीव के कुछ उग्रवादी इस्लामी लोग सारी इस्लामी दुनिया का प्रतिनिधित्व करते हैं? सच्चाई तो यह है कि मालदीव के ये विघ्नसंतोषी लोग इस्लाम को बदनाम करने का काम कर रहे हैं। इस्लाम का योग से क्या विरोध हो सकता है? क्या योग बुतपरस्ती सिखाता है? क्या योगाभ्यास करने वालों से यह कहा जाता है कि तुम नमाज़ मत पढ़ा करो या रोजे मत रखा करो? वास्तव में नमाज और रोज़े, एक तरह से योगासन के ही सरल रूप हैं। यह ठीक है कि योगासन करने वालों से यह कहा जाता है कि वे शाकाहारी बनें। शाकाहारी होने का अर्थ हिंदू या काफिर होना नहीं है।

बाढ़ से निपटने की रणनीति, जलवायु परिवर्तन का मुद्दा ध्यान रखना होगा

सही हो या गलत, कुछ आपदाओं पर दूसरों की तुलना में ज्यादा ध्यान दिया जाता है। इसकी कई वजहें हैं। आपदा के कवरेज का स्तर और तीव्रता वास्तविक पीड़ा के पैमाने के बजाय निकटता, लोगों की रुचि और इसमें शामिल आर्थिक दांव पर निर्भर करता है। निश्चित रूप से देश के कुछ हिस्सों या समुदायों को तभी पहले पन्ने पर या प्राइमटाइम टीवी में जगह मिलती है, जब आपदा इतनी बड़ी हो कि इसे नजरंदाज या कम करके आंका नहीं जा सकता है।

यही चीज मुझे असम या पूर्वोत्तर के कुछ हिस्सों या पड़ोसी बांग्लादेश की विनाशकारी बाढ़ में दिखती है। हजारों मील दूर महाराष्ट्र में चल रहे सियासी संकट का केंद्र बन जाने के कारण असम अभी चर्चा में है। इसके मद्देनजर असम के मुख्यमंत्री राज्य पर्यटन की संभावनाओं को लेकर काफी मुखर रहे हैं, लेकिन तथ्य यह है कि असम के कुछ हिस्सों में बाढ़ के कारण आम लोगों की स्थिति बहुत गंभीर है और वे तत्काल बचाव की जरूरत महसूस कर रहे हैं। यह लेख लिखे जाने के समय तक असम में बाढ़ से 127 लोगों की मौत हो चुकी है और जब तक यह प्रकाशित होगा, मरने वालों की संख्या बढ़ चुकी होगी। असम में बराक घाटी के कछार जिले का मुख्यालय सिलचर लगातार सातवें दिन पांच से आठ फीट पानी में डूबा हुआ है और करीब दो लाख लोग भोजन, पानी और अन्य जरूरी चीजों की कमी का सामना कर रहे हैं। बांग्लादेश में बाढ़ से मरने वालों की संख्या 80 पार कर गई है। असम में बाढ़ का मीडिया कवरेज उम्मीद के मुताबिक, दुर्गम क्षेत्रों में राहत के प्रावधान और बचाव व राहत कार्यों के अंतर पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। लेकिन जलवायु परिवर्तन के समय में हमें प्राकृतिक आपदाओं को न केवल तत्काल बचाव और राहत कार्य के चश्मे से देखना चाहिए, बल्कि तैयारियों की दृष्टि से भी देखना चाहिए। कोई जिला या राज्य या देश जिस हद तक आपदाओं के प्रति संवेदनशील होता है, उसका इस बात से काफी कुछ लेना-देना होता है कि वह ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए कितना तैयार है।

मौसम की मार

महाराष्ट्र, तमिलनाडु, ओडिशा, कर्नाटक और गुजरात जैसे अति संवेदनशील राज्यों ने हाल के वर्षों में अपने डीडीएमपी और जलवायु-रोधी महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे में सुधार किया है। यह राजनीतिक और प्रशासनिक प्राथमिकताओं और आपदा तैयारियों की पूर्ण तात्कालिकता की तरफ हमारा ध्यान खींचता है।

पिछले वर्ष भारत की जलवायु भेद्यता (संवेदनशीलता) का मानचित्रण करने वाली एक महत्वपूर्ण रिपोर्ट आई थी, जिसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए। दिल्ली स्थित थिंक टैंक ऊर्जा, पर्यावरण एवं जल परिषद (सीईईडब्ल्यू) के जलवायु संवेदनशीलता सूचकांक के अनुसार, असम, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक और बिहार बाढ़, सूखा या चक्रवात जैसी चरम जलवायु घटनाओं के लिए सबसे अधिक संवेदनशील हैं। कुल मिलाकर, 27 भारतीय राज्य और केंद्र शासित प्रदेश चरम जलवायु घटनाओं की चपेट में फंसे हैं, जो अक्सर स्थानीय अर्थव्यवस्था को बाधित करते हैं और कमजोर समुदायों को विस्थापित करते हैं। 80 प्रतिशत से अधिक भारतीय जलवायु जोखिम के प्रति संवेदनशील जिलों में रहते हैं। कुछ और आंकड़ों को देखिए-भारत के 640 जिलों (2011 की जनगणना) में से 463 जिले अत्यधिक बाढ़, सूखे और चक्रवातों की चपेट में हैं। चिंतित करने वाली बात यह है कि इनमें से 45 प्रतिशत से अधिक जिलों में अस्थिर परिदृश्य और बुनियादी ढांचे में बदलाव आया है। सीईईडब्ल्यू का अध्ययन रेखांकित करता है कि मात्र 63 फीसदी भारतीय जिलों के पास जिला आपदा प्रबंधन योजना (डीडीएमपी) है। इन योजनाओं को हर साल अद्यतन करने की आवश्यकता होती है, लेकिन उनमें से केवल 32 प्रतिशत जिले के पास ही 2019 तक अद्यतन योजनाएं थीं।

पत्रलेखा चटर्जी

मिला जुला

देश में फिर पैर पसार रहा कोरोना

24 घंटे में 23.0% बढ़े केस, 30 लोगों की हुई मौत

नई दिल्ली. कोरोना के केस एक बार फिर बढ़ने लगे हैं. पिछले 24 घंटे में देश में कोरोना के 14,506 मामले दर्ज किए गए हैं. कल की तुलना में ये 23.0त्न ज्यादा हैं. अब तक देश में कोरोना के 4,34,33,345 मामले सामने आ चुके हैं.

वहीं, पिछले 24 घंटे में कोरोना से 30 लोगों की मौत हुई है. इससे पहले मंगलवार को देश में 11,793 केस दर्ज किए गए थे.

1 लाख के करीब एक्टिव केस

देश में एक्टिव केस बढ़कर 1 लाख के करीब पहुंच गए हैं. देश में पिछले 24 घंटे में 2902 एक्टिव केस बढ़े हैं. कुल एक्टिव केस 99,602 पहुंच गए हैं.

5 सबसे संक्रमित राज्यों की बात करें, तो महाराष्ट्र में 3,482, केरल में 2,993 , तमिलनाडु में 1,484, कर्नाटक में 968 और बंगाल में 954 केस मिले हैं. यानी देश में कुल मिले केसों में 68.11त्न इन्हीं 5 राज्यों में मिले हैं. महाराष्ट्र में अकेले 24.0त्न केस मिले हैं.

पिछले 24 घंटे में कोरोना से 30 लोगों की मौत हुई है. अब तक देश में कोरोना से 5,25,077 लोग अपनी जान गंवा चुके हैं. भारत में रिकवरी रेट अभी भी 98.56त्न है. पिछले 24 घंटे में देश में 11,574 मरीज ठीक हुए हैं. अब तक देश में 4,28,08,666 मरीज ठीक हो चुके हैं.

उदयपुर हत्याकांड की निंदा करते हुए बोले अजमेर दरगाह प्रमुख

'भारत में जगह नहीं देंगे तालिबानी मानसिकता को'

जयपुर. उदयपुर में दिन दहाड़े एक दर्जी की हत्या ने हर किसी को हिला दिया है. अब पूरे देश में हर कोई इस घटना की निंदा कर रहा है. उदयपुर हत्याकांड पर अब अजमेर दरगाह दीवान जैनुल आबेदीन अली खान की भी प्रतिक्रिया आई है. उन्होंने इस घटना की निंदा करते हुए कहा भारत के मुसलमान देश में कभी भी तालिबानीकरण की मानसिकता को सामने नहीं आने देंगे. उदयपुर में दो लोगों ने एक दर्जी की हत्या कर दी और ऑनलाइन वीडियो पोस्ट करते हुए कहा कि वे इस्लाम के अपमान का बदला ले रहे हैं. जैनुल आबेदीन अली खान ने एक बयान में कहा, 'कोई भी धर्म मानवता के खिलाफ हिंसा को बढ़ावा नहीं देता है.

सख्त कार्रवाई हो

उन्होंने कहा, 'मैं इस कृत्य को दृढ़ता से निंदा करता हूं और सरकार से उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का अनुरोध करता हूं. भारत के मुसलमान हमारी मातृभूमि में कभी भी तालिबानीकरण की मानसिकता को सामने नहीं आने देंगे.' वहीं जमीयत उलेमा-ए-हिंद के महासचिव मौलाना हकीमुद्दीन कासमी ने भी हत्या की निंदा की. उन्होंने एक बयान में कहा, 'जिसने भी इस घटना को अंजाम दिया उसे किसी भी तरह से सही नहीं ठहराया जा सकता, यह देश के कानून और हमारे धर्म के खिलाफ है.'

हत्या के आरोप में रियाज अख्तरी और गौस मोहम्मद के रूप में पहचाने गए दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है. एक वीडियो क्लिप में, अख्तरी ने घोषणा की कि उन्होंने उस व्यक्ति का सिर काट दिया है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धमकी देते हुए कहा कि उनका चाकू उसे भी मिल जाएगा. परोक्ष रूप से, हमलावरों ने पैगंबर मोहम्मद पर एक टिप्पणी को लेकर पार्टी से निलंबित भाजपा नेता नूपुर शर्मा का भी जिक्र किया. दर्जी कन्हैया लाल को हाल ही में स्थानीय पुलिस ने सोशल मीडिया पर उनके द्वारा की गई कुछ टिप्पणियों के लिए गिरफ्तार किया था.

बिलखते हुए कन्हैयालाल की पत्नी बोली- 'हत्यारों को फांसी दो, नहीं तो ये लोग कल किसी और को मार देगा'

उदयपुर. उदयपुर हत्याकांड में जान गंवाने वाले दर्जी कन्हैयालाल के अंतिम संस्कार में भारी संख्या में लोग जुटे। भारी पुलिस सुरक्षा के बीच कन्हैयालाल के अंतिम संस्कार का इंतजाम किया गया। कन्हैयालाल का शव निकलने के दौरान उनकी पत्नी ओर परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल दिखा। कन्हैयालाल साहू की पत्नी ने कहा, 'आरोपियों को फांसी दो, आज उसने हमें मारा है, कल दूसरों को मारेगा।' कन्हैयालाल की पत्नी यशोदा ने बताया कि 10-15 दिनों से धमकी दिया जा रहा था। मार देंगे-काट देंगे की धमकी लगातार मिल रही थी। धमकी देने वाले घर और दुकान दोनों जगह आते थे। उन्होंने बातया कि धमकी देने वाले ज्यादातर दुकान पर ही आते थे। फोन पर भी धमकी देते थे। एक बार दुकान पर क औरत और जेंट्स मुस्लिम लिवास में भी धमकी देने आए थे। यशोदा ने बताया कि कन्हैयालाल ज्यादा बातें घर में जिक्र नहीं करते थे। एक बार घर पर एक जेंट्स आया और धमकी देकर गया कि मार देंगे-काट देंगे। कन्हैयालाल की पत्नी ने कहा कि अशोक गहलोत जी और पीएम नरेंद्र मोदी जी हमारे पति को मारने वाले को मारो। तभी ये लोग सुधरेंगे।

अग्निपथ को युवा विरोधी बता रही थी कांग्रेस, उसके ही सांसद मनीष तिवारी ने लेख किया गुणगान

नई दिल्ली. अग्निपथ स्कीम का पिछले दिनों देशभर में भारी विरोध हुआ। यूपी-बिहार समेत कई राज्यों में युवा सड़कों पर दिखे, कुछ शहरों में आगजनी की घटनाएं भी हुईं। फिलहाल योजना के तहत भर्ती प्रक्रिया शुरू हो चुकी है और विरोध की आग बुझ चुकी है। कांग्रेस समेत कई विपक्षी दल केंद्र सरकार से इस योजना को वापस लेने की मांग कर रहे हैं। इस बीच, कांग्रेस के ही सांसद मनीष तिवारी ने अंग्रेजी अखबार 'इंडियन एक्सप्रेस' में लेख लिखकर न सिर्फ 'अग्निपथ' का सपोर्ट किया बल्कि इसे रक्षा सुधारों और आधुनिकीकरण की व्यापक प्रक्रिया का हिस्सा बताया। ऐसे में कांग्रेस ने झट से अपने सांसद की राय से दूरी बनाते हुए कहा कि उसका यह मानना है कि सेना में भर्ती की यह नई योजना राष्ट्रीय हित और युवाओं के भविष्य के खिलाफ है।

बागी विधायकों के साथ शिंदे भी लौटेंगे

राज्यपाल ने सीएम को बहुमत साबित करने के लिए लिखा पत्र

मुंबई. महाराष्ट्र की उद्धव सरकार पर संकट के बादल तेजी से मंडराने लगे हैं। राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने सीएम को पत्र लिखकर बृहस्पतिवार को 11 बजे बहुमत साबित करने का आदेश दिया है। हालांकि इसपर अभी तक शिवसेना की तरफ से कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। राज्यपाल की तरफ से भेजे गए पत्र में कहा गया है कि कार्यवाही गुरुवार शाम 5 बजे तक पूरी करनी है। यह महाराष्ट्र के राज्यपाल द्वारा 30 जून को फ्लोर टेस्ट के लिए भेजे गए एक कथित पत्र के मंगलवार शाम को सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद आया है। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य को परेशान करने वाला बताते हुए राज्यपाल ने लिखा, 'इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में व्यापक कवरेज हुआ है कि शिवसेना विधायक दल के 39 विधायकों ने महा विकास अघाड़ी सरकार से बाहर निकलने की इच्छा और निर्णय लिया है।' राज्यपाल ने लिखा, 'इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में रिपोर्ट सहित मेरे सामने उपलब्ध सभी सामग्री को ध्यान से देखने के बाद मेरी राय है कि मुख्यमंत्री के बहुमत को साबित करने के लिए एक फ्लोर टेस्ट अनिवार्य है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सरकार सदन के विश्वास से चल रही है।' उचित सुरक्षा व्यवस्था का आह्वान करते हुए राज्यपाल ने लिखा, 'कुछ नेताओं द्वारा दिए गए भड़काऊ बयानों को देखते हुए, मतदान प्रक्रिया की पवित्रता बनाए रखने के लिए और किसी भी कानून और व्यवस्था की स्थिति को बढ़ाने के लिए विधानसभा भवन के बाहर और अंदर पर्याप्त सुरक्षा तैनात की जाएगी।'

कोंटा नगर पंचायत में मंत्री कवासी लखमा ने लगाई सौगातों की झड़ी

सुगम सड़क योजना अंतर्गत 12 सड़क निर्माण कार्यों का किया भूमिपूजन

जोहार छत्तीसगढ़–सुकमा।

उद्योग एवं आबकारी मंत्री कवासी लखमा ने बुधवार को कोंटा वासियों पर सौगातों की झड़ी लगाई। उन्होंने कोंटा जनपद अंतर्गत विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन और लोकार्पण किया। इसके साथ ही हितग्रहियों को विभिन्न योजनाओं के तहत राशि भी प्रदान की। मंत्री कवासी लखमा ने आर्थिक रूप से कमजोर 154 हितग्राहियों को 5-5 हजार की स्वेच्छानुदान राशि प्रदान की। सुलोचना को बेहतर चिकित्सा के लिए 20 हजार की राशि प्रदान की। इसके साथ ही प्राकृतिक आपदा में हुए मानव क्षति के लिए 4 परिवारों को 4-4 लाख की आर्थिक सहायता राशि एवं पशु क्षति के लिए 13 हितग्राहियों की कुल 4 लाख 36 हजार की आर्थिक सहायता राशि प्रदान की।

तेंदुपत्ता संग्रहण पारिश्रमिक का नगद भुगतान के लिए संग्राहकों ने प्रकट किया आभार, मंत्री को भेंट की गणपति की प्रतिमा

सुकमा जिले में तेंदुपत्ता संग्रहण यहां के ग्रामीण निवासियों के लिए आय के प्रमुख जरियों में से एक है। कोंटा तहसील के तेंदुपत्ता संग्राहकों ने मंत्री कवासी लखमा को बुधवार को गणपति की प्रतिमा भेंट कर जिले में नगद पारिश्रिक भुगतान के लिए धन्यवाद दिया। नक्सल प्रभावित एवं अंदरूनी क्षेत्रों के तेंदुपत्ता संग्राहकों के हितों को ध्यान में रखते हुए मंत्री के प्रयासों की हितग्राहियों ने स्वागत किया। मंत्री कवासी लखमा ने बुधवार को कोंटा में 15 तेंदुपत्ता संग्राहक परिवारों को कुल 2 लाख रुपए की नगद पारिश्रमिक का भुगतान किया। इसके साथ ही मंत्री कवासी लखमा ने कोंटा तहसील अंतर्गत ग्राम बंजामुगड़ा के 17 व्यक्तियों को व्यक्तिगत वन अधिकार का प्रमाण पत्र प्रदान किया। और 75 हितग्राहियों को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अन्तर्गत नि:शुल्क धान बीज, उड़द बीज, रागी का वितरण किया। इस अवसर पर आयोजित आम सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने सुकमा जिले में विगत साढ़े तीन वर्षों में हुए विकास कार्यों को दोहराया। उन्होंने कहा की मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जन नायक है। उनके मार्गदर्शन में आज सुकमा सहित पूरे बस्तर संभाग में बदलाव और विकास की बयार बह रही है। पहले जिन क्षेत्रों में आवागमन की कल्पना करनी भी मुश्किल थी। आज वहां पक्की सड़क बनी हैं। शिक्षा के स्तर को बेहतर करने के लिए शासन द्वारा विशेष प्रयास कि, जा रहे हैं। सलवा जुडूम के दौरान नक्सली हिंसा में ध्वस्त स्कूलों का पुन: संचालन किया जा रहा है। नए स्कूल, आश्रम शाला भवन बनाए जा रहे है। आदिवासी लोगो की पहचान आज विश्व पटल पर है। देश विदेश में विश्व आदिवासी दिवस मनाया जाता है। देवगुढ़ी के माध्यम से आदिवासियों की कला, संस्कृति, उनके आस्था के संरक्षण के प्रति संकल्पित होकर कार्य किया जा रहा है। आदिवासियों को वनोपज का सही दाम प्रदान किया जा रहा है। मलेरिया, एनीमिया और कुपोषण कम करने में भी जिले में सफल प्रयास हुए है। उन्होंने आम सभा में टेटराई में आगमी 6 माह में बिजली लगाने की घोषणा की। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष हरीश कवासी, जिला पंचायत उपाध्यक्ष बोड्डू राजा, सुकमा नगर पालिका अध्यक्ष जगन्नाथ साहू, कोंटा नगर पंचायत अध्यक्ष मौसम जया, कोंटा जनपद अध्यक्ष सुत्रम नागेश सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, एसडीएम कोंटा बनसिंह नेताम, जनपद सीईओ कैलाश कश्यप सहित गणमान्य नागरिक और ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

17 व्यक्तियों को प्रदान किया व्यक्तिगत वनाधिकार प्रमाण पत्र

बस्तर में बह रही विकास और बदलाव की धारा-मंत्री कवासी लखमा

एक नजर

नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर आज

जोहार छत्तीसगढ़–महासमुंद।

मरार समाज तुमगांव व जय मां शीतला आधार युवा शक्ति के द्वारा स्थानीय रेस्ट हाउस सोनल मेडिकल के पास आज गुरुवार को नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। नगर पंचायत उपाध्यक्ष व संयोजक जय मां शीतला आधार युवा शक्ति के संयोजक पप्पू पटेल ने बताया कि इस शिविर में एमजीएम संस्थान के नेत्र रोग विशेषज्ञ द्वारा आंखों की विभिन्न प्रकार की बीमारियों की जांच की जाएगी तथा उचित परामर्श एवं उपचार प्रदान किया जाएगा। जिन लोगों को चश्में की आवश्यकता होगी उन मरीजों की जांच अत्याधुनिक जापानी मशीन द्वारा जांच की जाएगी और चश्में भी बनाए जाएंगे। आयोजक ने बताया कि इस शिविर में पुराने सभी मरीज जो पहले आंख का आपरेशन करवा चुके है तथा अन्य मरीज जिन्हें आखों से संबंधित किसी प्रकार की समस्या हो वे सभी लोग इस शिविर में आकर अपनी जांच करवा सकते है। शिविर का आयोजन रेस्ट हाउस के पास सोनल मेडिकल के परिसर में जांच केंद्र में सुबह 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक किया जाएगा।

तहसीलदार की कूटरचना पर अपराध दर्ज करने कोर्ट का आदेश

तहसीलदार महासमुंद के खिलाफ शिकायतों की लंबी लिस्ट

जोहार छत्तीसगढ़–महासमुंद।

फौती व नामांतरण प्रकरण में आदेश पत्रक में कूट रचना कर गायब व नष्ट कर परिवर्तित करने के आरोप में मजिस्ट्रेट चित्रलेखा सोनवानी ने महासमुंद तहसीलदार प्रेमू साहू व मुख्य न्यायिक अन्य के खिलाफ कार्रवाई का आदेश दिया है। तहसीलदार सहित पलिस अन्य व्यक्तियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर अंतिम रिपोर्ट न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए पुलिस को आदेशित किया है। रिपोर्ट कोतवाली थाना प्रभारी प्रस्तुत करेंगे। जानकारी के अनुसार वार्ड क्रमांक-20 रेलवे स्टेशन रोड निवासी अमरजीत सिंह गुरुदत्ता पिता हिम्मत सिंग ने राजस्व मामले में हेर-फेर का न्यायिक मजिस्ट्रेट में परिवादी दर्ज कराया था। उसने बताया कि उसके पिता ने तहसील कार्यालय महासमुंद में फौती व नामांतरण के लिए लगाया था। हिम्मत सिंह के पिता गुरुमुख सिंह के स्वामित्व की भूमि खसरा नंबर 72/73 रकबा 0.280 हेक्टेयर को वारिसानों के नाम दर्ज के लिए आवेदन 28 जुलाई 2021 को लगाया था। इस मामले में तहसीलदार प्रेमू साहू ने 6 अप्रैल वाले आदेश पत्रक को बदल दिया। ऑनलाइन में आदेश पत्र है। लेकिन ऑफ लाइन में गायब है। वहीं 21 मार्च के आदेश पत्रक में हेराफेरी की है। ऑनलाइन में भी हेराफेरी की गई। मामले में मंगलवार को आरोप सिद्ध होने पर तहसीलदार सहित अन्य पर केस दर्ज करने का आदेश दिया गया।

जनसेवा केंद्र में कर्मकारों का होगा नि:शुल्क पंजीयन

जोहार छत्तीसगढ़–महासमुंद।

संसदीय सचिव व विधायक विनोद सेवनलाल चंद्राकर के निवास पर स्थित जनसेवा केंद्र में संगठित कर्मकार व असंगठित कर्मकारों का नि:शुल्क पंजीयन किया जाएगा। वहीं श्रम विभाग से संबंधित कार्यों व योजनाओं का आवेदन भी मुफ्त में होगा। संसदीय सचिव चंद्राकर की पहल से श्रमिकों को योजनाओं का लाभ उठाने में सहुलियत हो सकेगी। मिली जानकारी के अनुसार विधायक निवास में जनसेवा केंद्र संचालित की जा रही है। जहां संगठित कर्मकार व असंगठित कर्मकारों के पंजीयन की सुविधा है। कर्मकारों का पंजीयन नि:शुल्क होगा। उक्त जानकारी देते हुए दुर्गेश साहू ने बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा महतारी जतन योजना, नौनिहाल छात्रवृत्ति योजना, कर्मकार मृत्य एवं दिव्यांगता सहायता योजना, मुख्यमंत्री नोनी सशक्तिकरण योजना, दुर्घटना चिकित्सा सहायता योजना सहित श्रमिकों की स्थिति में सुधार लाने के लिए सरकार कई प्रकार की योजनाएं चला रही है। स्वास्थ्य, शिक्षा सहित अन्य सुविधाओं का लाभ पहुंचाकर समाज में उन्हें आगे लाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि श्रम विभाग से संबंधित सभी कार्य, संगठित व असंगठित कार्ड, नवीनीकरण सहित सभी योजनाओं का आवेदन निशुल्क किया जाएगा। उन्होंने श्रमिकों से शासन की योजनाओं का लाभ उठाने का आव्हान किया है। विस्तृत जानकारी के लिए दुर्गेश साहू 9575192655 में सम्पर्क कर सकते है।

10 लाख की लागत से होगा निर्माण कार्य

भिलाई । सेक्टर 4 वार्ड 57 के वार्डवासियों को भिलाईनगर विधायक देवेंद्र यादव ने एक और बेहतरीन सौगात देने वाले है। अपने विधायक निधि से सेक्टर 4 में एस्ट्रोटूफसह एलईडी लाइट सह स्ट्रोटर्फ युक्त बैडमिंटन कोर्ट का निर्माण किया जाएगा। जिसका ड्राइंग डिजाइन तैयार करने के साथ ही प्रशासनिक स्वीकृति होने के साथ अब जल्द ही इसका भूमिपूजन कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

राजहरा का डेम साइड खो रहा है अपना अस्तित्व

दल्लीराजहरा । राजहरा में निर्मित तालाबों का तो बुरा हाल है क्योंकि इनको संजोने संवारने के लिए जवाबदार लोगों के पास समय नहीं है या फिर फंड नहीं है। दूसरा एक बड़ा जल स्रोत डेम साइड भी अपनी दुर्दशा का आंसू बहा रहा है ।यह डेम पूरी तरह घास और जलकुंभियों से ढक गया है। देखने से ऐसा महसूस हो रहा है यहां एक बड़ा डेम ना होकर घास का मैदान है। क्योंकि दूर-दूर तक इसमें पानी का एक कतरा भी नजर नहीं आ रहा है । जनप्रतिनिधियों की यही उदासीनता रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह जल स्रोत सचमुच में मैदान में तब्दील हो जाएगा। 1973 - 74 में बना डेम साईड का जल स्रोत राजहरा में बीएसपी के द्वारा टाउनशिप के क्वार्टरों में पेयजल के लिए भी इसका उपयोग होता है। दल्ली राजहरा को ऐसे जनप्रतिनिधि की अति आवश्यकता है जो इस प्राकृतिक स्रोतों को सहेज कर रख सके । जनप्रतिनिधि दल्ली राजहरा के विकास के बारे में सोचें। ताकि आने वाले समय में पानी की संकट होती है उससे बचा जा सके । डेम साईड में डम्प हुए मटेरियल को निकालकर उसमें सफाई की आवश्यकता है। जिससे साफ पानी उसमें फिर से भर सके। आज देखने से ऐसा लगता है कि डेम पूरा मिट्टी और गाद से भर गया है।

एक समय था जब राजहरा के गणेश उत्सव एवं दर्गा उत्सव के समय भगवान गणेश और माँ भगवती की मूर्ति का विसर्जन इसी डेम में होता था । लोग इसके किनारे पिकनिक मनाने आते।

दल्ली राजहरा से डौंडी की ओर जाने वाले तथा महामाया मंदिर के दर्शन करने जाने वाले लोग यहां रुक रुक कर एक बार डेम को जरूर निहारते थे। साफ स्वच्छ पानी के बीच डेम साइड के किनारे दाएं तरफ सफेद रंग के फूल देखने में ही मनोरम दृश्य बड़ा सुंदर लगता था। लेकिन आज यह स्थिति ठीक इसके विपरीत है बीएसपी प्रबंधन भी इस डेम की साफसफाई के लिए गंभीरता से ध्यान नहीं दे रहा है।

श्रम दान व केक काटकर मनाया मोहन मरकाम का जन्मदिन

जोहार छत्तीसगढ़–महासमुंद।

छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष माननीय मोहन मरकाम के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में 3 वर्ष के कार्यकाल पूर्ण करने के अवसर पर महासमुंद कांग्रेस कमेटी के समस्त कांग्रेसजनों ने केक काटकर एवं नवनिर्मित राजीव भवन में चल रहे निर्माण कार्य में अपना श्रमदान करके माननीय मोहन मरकाम जी को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित किया। माननीय मोहन मरकाम के प्रदेश अध्यक्ष बनने के पश्चात प्रदेश कांग्रेस कमेटी एवं छत्तीसगढ़ में एक नए जोश खरोश के साथ जो कार्य किया गया। जिससे छत्तीसगढ़ कांग्रेस कमेटी ने मजबूती से कार्य किया। संगठन और अधिक मजबूत हुई है एवं मैदानी क्षेत्र के अलावा आदिवासी क्षेत्र का भी विकास समान रूप से हुआ है। जब से मोहन मरकाम प्रदेश अध्यक्ष बने हैं तब से एक लोकसभा एवं 4 विधानसभा के उपचुनाव में अत्यधिक वोटो से प्रत्याशी विजयी हुई है तथा छत्तीसगढ़ के नगर निगम में महापौर वा नगरपालिका अध्यक्षों के रूप में चुनाव जीतना कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशियों का बोलबाला रहा तथा अधिकतर नगरी निकाय क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्रों में कांग्रेस के प्रत्याशी की जीत हुई। मोहन मरकाम के सरल स्वभाव एवं कठोर मेहनत का नतीजा है की आज छत्तीसगढ़ पूरे भारत भर में कांग्रेस पार्टी का एक मजबूत संगठन दिखता है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के द्वारा जितने भी कार्यक्रम छत्तीसगढ़ कांग्रेस कमेटी को प्रदर्शनए धरनाए घेराव आम जनता के समस्याओं के लिए जो भी केंद्रीय कमेटी के द्वारा कार्यक्रम निर्धारित किया गया। उन्हें सफलतापूर्वक जमीनी रूप में कार्यान्वित करने का श्रेय प्रदेश अध्यक्ष मोहन मरकाम को जाता है कांग्रेस पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्षों का अनुभवो का लाभ लेते हुए माननीय मरकाम ने एक सफल कार्यकाल कि 3 वर्ष जो कि बेमिसाल रहा उसे पूर्ण किया तथा भविष्य में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के द्वारा दी गई जिम्मेदारियों का निर्वहन करने को भी पूर्णता सक्षम हैं। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष को पूरे जिले की ओर से बधाई एवं उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए। शुभकामनाएं प्रेषित किया गया। उक्त कार्यक्रम में कांग्रेस कमेटी महासमुंद के खिलावन बघेल शहर अध्यक्ष,संजय शर्मा प्रभारी महामंत्री, सोमेश दवे, गुरमीत चावला, सुरेश द्विवेदी, विजय साव, निखिलकांत साहू, अन्नू चंद्राकर,दसोदा ध्रुव, भूमिका ध्रुव, अनवर हुसैन,जावेद चौहान,प्रदीप चंद्राकर,शकील खान, हर्षित चंद्राकर, नितेंद्र बेनर्जी, गिरजा शंकर चंद्राकर, बसंत चंद्राकर, डॉ तरुण साहू, आरिफ बेग, रामजी साहू, बादल, उमेश रावल, भरत लाल साहू, मेहुल सूचक, गोपी पाटकर, नरेंद्र चंद्राकर, जाकिर रजा, खेमराज ध्रुव, निर्मल जैन, सतीश कन्नौजे आदि पदाधिकारीगण कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

जिला स्तरीय एनीमिया मुक्त कोरबा कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

एनीमिया की रोकथाम के लिए बच्चों, गर्भवती-शिशुवती माताओं को दी गयी आयरन की दवाई

कोरबा । जिले में बच्चे एवं महिलाओं में खून की कमी दूर करने के लिए जिला स्तरीय एनीमिया मुक्त कोरबा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। जिला स्तरीय कार्यक्रम का शुभारंभ निगम क्षेत्र के स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल पंपहाउस, आंगनबाडी केन्द्र पंपहाउस एवं आंगनबाडी केन्द्र गेरवाघाट से बच्चों को आयरन सिरप एवं टेबलेट खिलाकर किया गया। इस दौरान सीएमएचओ डॉ. बीबी बोर्डे, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग एमडी नायक, जिला शिक्षा अधिकारी जी.पी. भारद्वाज, विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी संजय अग्रवाल एवं पंपहाउस स्कूल के प्राचार्य विवेक लाण्डे मौजूद रहे। जिले में छह माह से पांच वर्ष तक के बच्चे, गर्भवती माता, शिशुवती माता एवं छह से 18 वर्ष तक के बालक-बालिकाओं में खून की कमी के ईलाज के लिए जिले में विशेष अभियान चलाया जा रहा हैं। इस अभियान के तहत् छह वर्ष से 18 वर्ष तक के स्कूली बालक-बालिकाओं को प्रति सप्ताह एक आयरन टेबलेट स्कूल में ही प्रदान किया जाएगा। इसके अलावा सभी आंगनबाडी केन्द्रो में छह माह से 59 माह तक के बच्चों को प्रति सप्ताह आयरन सिरप पिलाया जाएगा। गर्भवती, शिशुवती माताओं को प्रतिदिन एक आयरन गोली तथा 11 से 18 वर्ष तक के शाला त्यागी किशोरियों को प्रति सप्ताह एक आयरन गोली खाने के लिए दिया जाएगा।

राज्य शासन के कर्मचारियों को केन्द्र शासन के समान देय व महंगाई भत्ता की स्वीकृती के लिए कलेक्टर के नाम एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

जोहार छत्तीसगढ़–सुकमा।

राज्य शासन के कर्मचारियों को केन्द्र शासन के समान देय व महंगाई भत्ता के लिए मांग को लेकर बजार पारा स्थित मैदान में एक दिवशीय धरना प्रदर्शन कर कलेकटर के नाम एसडीएम को ज्ञापन सौंपते हुए संदर्भित आदेश क्रमांक 1, के द्वारा राज्य शासन के कर्मचारियों को 12: महंगाई भत्ता से केंद्र शासन के समान देय तिथि से स्वीकृत किया गया था। अवगत होंवे कि संदर्भित आदेश क्रमांक 2, के द्वारा राज्य शासन के कर्मचारियों को 17: महंगाई भत्ता से स्वीकृत किया गया था। जबकि केन्द्र शासन के द्वारा 17: महंगाई भत्ता से स्वीकृत किया। गया था। जिसके फ लस्वरूप राज्य शासन के कर्मचारियों को प्राप्त वेतन में आर्थिक क्षति हुआ था। जो कि आज पर्यन्त हो रहा है। ज्ञात हो कि फेडरेशन के द्वारा को आपसे हुए वार्ता में पक्ष रखा गया था। जिस पर बाद में निर्णय लिये जाने का आश्वासन दिया गया था। लेकिन राज्य शासन ने निर्णय नहीं लिया हैं। लेख है कि आदेश क्रमांक 3, के कर्मचारियों को सातवें वेतनगान पर 22: महंगाई भत्ता स्वीकृत किया गया है। जोकि केंद्र शासन द्वारा महंगाई भत्ता से स्वीकृत किया गया है, जोकि केंद्र शासन द्वारा महंगाई भत्ता स्वीकृति हेतु लेख है कि केंद्र शासन द्वारा 17: से 28: महंगाई भत्ता से प्रभावशील किया था। जिसमें देय तिथि 4: का 3: एवं का 4: इस तरह कुल 11: सम्मिलित है।

केरलापाल के बच्चे पढ़ेंगे नए स्कूल भवन में

उद्योग मंत्री कवासी लखमा ने किया नवीन प्राथमिक शाला का लोकार्पण

जोहार छत्तीसगढ़–सुकमा।

सुकमा विकासखंड अंतर्गत ग्राम केरलापल में उद्योग एवं आबकारी मंत्री कवासी लखमा ने बच्चों को नवीन स्कूल भवन की सौगात दी। उन्होंने जिला खनिज संस्थान न्यास निधि से 49.99 लाख की लागत से निर्मित नवीन प्राथमिक शाला भवन का फीता काटकर लोकार्पण किया। वर्तमान समय में प्राथमिक शाला केरलापाल में 70 बच्चे दर्ज है। नए दाखिले चालू है। इस अवसर पर सुकमा जिला पंचायत अध्यक्ष हरीश कवासी सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, जिला शिक्षा अधिकारी नितिन डडसेना, विकासखंड शिक्षा अधिकारी रीना सिंह एवं शिक्षक गण तथा स्कूली छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

बच्चों को फूल माला पहनाई, गणवेश प्रदान किए

मंत्री कवासी लखमा ने नव प्रवेशित बच्चों को फूल माला पहनाई और गणवेश प्रदान कर शाला प्रवेश पर बधाई दी। उन्होंने बच्चों को खूब मन लगाकर पढ़ने के लिए प्रोत्साहन दिया। बच्चों एवं उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए मंत्री कवासी लखमा ने कहा कि बस्तर संभाग में शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिकता से कार्य किया जा रहा है। सुकमा जिले में पिछले 16 वर्षों से बंद पड़े स्कूल का पुन: संचालन किया जा रहा है। साथ ही नवीन शाला भवन भी बनाए जा रहे हैं। ताकि सुकमा के बच्चे भी शिक्षा से निरंतर जुड़े रहे। उन्होंने सरपंच, शिक्षकों सहित सभी बच्चों को बधाई दी।

घुमरगुड़ा पंचायत में मनरेगा कार्य में गड़बड़ी सहित विकासमद में भ्रष्टाचार के आरोप

शिकायत के बाद पंचायत पहुंचा जांच दल जांच के बाद सौंपेंगे रिपोर्ट

जोहार छत्तीसगढ़–देवभोग।

देवभोग ब्लाक के घुमरगुड़ा पंचायत इन दिनों मनरेगा कार्यो में गड़बड़ी और 13वें 14वे तथा 15वें वित्त विकासमद में भष्ट्राचार को लेकर सुर्खियों में है। भ्रष्टाचार के मामले को लेकर यहां के जनपद सदस्य दर्शन सोनी ने एसडीएम से शिकायत कर कारवाई की मांग की थी।

जिस पर एसडीएम टीकाराम देवांगन ने एक चार सदस्यी जांच दल गठित करने के निर्देश देवभोग सीईओ को दिये थे। सीईओ एमएल मण्डावी ने आरईएस एसडीओ राधाकृष्ण शर्मा के नेतृत्व मे तकनिकी सहायक खूबलाल ध्रुव,कुरेन्द्र बघेल, करारोपण अधिकारी रजक वाली जांच दल को पंचायत भेज कर जांच रिपोर्ट सौंपने के आदेश जारी किये थे। जिसकी कल प्राथमिक जांच पूर्ण कर लिये गये है। हालांकि अभी जांच रिपोर्ट नहीं सौंपे गये है पर जांच दल तीन दिन के भीतर इसकी जांच रिपोर्ट तैयार कर सौंपने की बात कही है।

किन आरोपों की जांच किये गये

क्षेत्र क्रमांक 4के जनपद सदस्य दर्शन सोनी ने पंचायत पर बिना प्रस्ताव के मनरेगा के कार्यो में भारी गड़बड़ी करने और पंचायत को मिलने वाले विकास मद में व्यापक भ्रष्ट्राचार करने का आरोप लगाया है। वही जनपद सदस्य ने बिना कार्य किये राशी आहरण करने का भी गंभीर आरोप लगाया है। इस प्रकार बीते दो वर्षो में सरपंच सचिव और रोजगार सहायक ने शासन को लाखो का चुना लगाया है।

जांचदल तालाब को मापा पंचनामा तैयार कर औपचारिकता निभाकर वापस लौट आया

मनरेगा के जिस लिटीगुरिया और सपुरो पति बोतका के निजी तालाब पर फर्जीवाड़ा होने का आरोप था जांच दल पंचायत पहुंचकर उसको मापा औपचारिकता निभाया विकासमद के मामले पर बिना जांच किये वापस लौट आये। बात जब विकास मद के जांच का आया तो सचिव ने कार्यो के एमबी फाइल गरियाबंद जिला मुख्यालय में होना बताया जांच दल भी मान गये जबकि जांच दरम्यान शिकायत कर्ता और पंचायत प्रतिनिधियों के बीच इस बात को लेकर तकरार होता रहा।

आदेश के बाद जांच दल को जांच में पहुंचने में लगे दस दिन

शिकायत कर्ता जनपद सदस्य ने 6जून को इसकी शिकायत एस डीएम और सीईओ को की थी। शिकायत पर एसडीएम ने 18 जून को मामले के जांच आदेश जारी किये पर सीईओ द्वारा गठित जांच दल को जांच शुरू करने दस दिन लग गये। जांच शुरू करने में हुयी विलम्ब को लेकर शिकायत कर्ता ने संदेह व्यक्त किये है। प्रारम्भिक जांच कर के लौटे है अभी फाइल खंगालना देखते है स्थल निरीक्षण और माप का कार्य पूर्ण कर लिये गये है यदि गड़बड़ी पायी जाती है तो मूल्यांकन कर वसूली के लिये रिपोर्ट सौंपी जायेगी।

एक नजर

30 लीटर अवैध कच्ची महुआ शराब सहित 3 आरोपी गिरफ्तार

जोहार छत्तीसगढ़–रतनपुर।

30 लीटर अवैध कच्ची शराब सहित तीन आरोपी को रतनपुर पुलिस ने पकड़ा कल रात्रि करीब 9 बजे रतनपुर पुलिस को मूखबिर द्वारा सूचना मिला कि श्यामलाल साहू ग्राम खैरा अपने घर में अवैध रूप से महुआ शराब बिक्री हेतू रखा हुआ है के सूचना तस्दीक हेतू पुलिस ग्राम खैरा घटनास्थ्ल ग्राम खैरा पहुंचकर श्यामलाल साहू के घर रेड कार्यवाही की जहां तीन व्यक्ति एक टब में शराब रखकर पन्नी में पैक करते हुये मिले जिनका नाम पता पुछने पर अपना नाम,श्यामलाल साहू खैरा पीपरचौक,रामधुन यादव निवासी खैरा सूरज कंवर निवासी बाबापारा फूलवारीपारा थाना पाली जिला कोरबा का होना बताया जो तीनों घर के आंगन में एक प्लास्टिक के टब में रखे अवैध देशी महुआ शराब को पन्नी में पैक करते मिले जिनके कब्जे से करीब 30 लीटर देशी कच्ची महुआ शराब कीमती 3000 को मुताबिक जब्ती पत्रक समक्ष गवाहों के जप्त कर सील बंद कर कब्जा पुलिस लिया गया। धारा 34;2, आबकारी एक्ट के तहत कायर्वाही कर तीनो आरोपियों को रिमांड पर भेजा गया।

आंदोलन टालने प्रबंधन व भू-विस्थापितों की बैठक विफल, कल होगा महाघेराव

कोरबा । लंबित रोजगार, मुआवजा, पूर्व में अधिग्रहित जमीन की वापसी, प्रभावित गांव के बेरोजगारों को खदान में काम देने, महिलाओं को स्वरोजगार समेत 16 सूत्रीय मांग को लेकर महाप्रबंधक कार्यालय का घेराव टालने द्विपक्षीय वार्ता आयोजित की गई। बैठक में सकारात्मक पहल नहीं होने पर भू-विस्थापितों ने आंदोलन यथावत रखने की घोषणा कर दी। इसके साथ ही आंदोलन को सफ्ल बनाने गांव में बैठक शुरू कर दी।

छत्तीसगढ़ किसान सभा, रोजगार एकता संघ द्वारा एसईसीएल की खदानों से प्रभावित भू विस्थापितों किसानों के पुनर्वासए भू-विस्थापितों को काबिज भूमि का पट्टा देने के साथ 16 मांगो को लेकर सीएमडी के नाम ज्ञापन सौंप कर 30 जून को महाघेराव की घोषणा की। साथ ही गांव में बैठक करने के साथ घर घर पर्चे बांटे जा रहा है। मंगलवार को आंदोलन टालने के लिए किसान सभा के प्रतिनिधि मंडल के साथ एसईसीएल प्रबंधन ने बैठक हुई। इसमें प्रबंधन ने आंदोलन स्थगित करने कहा। बैठक में एसईसीएल की ओर से गेवरा महाप्रबंधक एसपी भाटी, कार्मिक प्रबंधक एस परीडा, अमिताभ तिवारी, नरसिम्हा राव एवं किसान सभा के प्रतिनिधि मंडल की ओर से जिलाध्यक्ष जवाहर सिंह कंवर, जय कौशिक, पुरषोत्तम, माकपा जिला सचिव प्रशांत झा, रोजगार एकता संघ के दामोदर श्याम, रेशम, सनत, रघु, सुमेन्द्र सिंह उपस्थित रहे। इस दौरान प्रतिनिधि मंडल ने प्रबंधन के आंदोलन स्थगित करने के प्रस्ताव को ठुकराते कहा कि मांगो पर निर्णय लेने का अधिकार आपके पास नहीं है, तो वार्ता करने का औचित्य नहीं। बिलासपुर के अधिकारियों को भू-विस्थापितों से बात करने के लिए आना ही होगाए तभी वार्ता होगी। इसके साथ ही प्रतिनिधि मंडल बैठक छोड़कर बाहर निकल गए। वार्ता विफ्ल होने के बाद 30 जून को प्रस्तावित महाघेराव को सफ्ल बनाने के लिए प्रभावित गांव जाकर घर-घर में पर्चे बांटना शुरू कर दिया गया। साथ ही नुक्कड़ सभा कर आंदोलन में शामिल होने के लिए लोगों से आह्वान किया गया।

नक्सलियों ने ग्राम पंचायत मोरमेड के सरपंच की गला घोटकर कर दी हत्या

बीजापुर । जिले के तोयनार थाना क्षेत्र के ग्राम मोरमेड मे कल देर शाम नक्सलियों ने अपनी तालीबानी सत्ता के वजूद को बनाये रखने के लिए एक बार फिर से ग्राम पंचायत मोरमेड के सरपंच प्रतिराम कुड़ियम की गला घोटकर हत्या कर दी है। मिली जानकारी के अनुसार नक्सली मृतक के परिवार के सदस्यों को अपना निशाना बनाते रहे हैं, इससे पहले भी परिवार के 02 सदस्यों को नक्सलियों ने मुखबिरी का आरोप लगाते हुए मौत के घाट उतार दिया था। सरपंच की नक्सलियों द्वारा हत्या किये जाने की पुष्टि बीजापुर एसपी सुनील शर्मा ने किया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार ग्राम मोरमेड मे कल देर शाम ग्रामीण वेशभूषा में नक्सलियों का एक ग्रुप गांव पहुंचा और ग्राम पंचायत मोरमेड के सरपंच प्रतिराम कुड़ियम को अपने साथ अगवा करके जंगल की ओर ले गए जिसके बाद नक्सलियों ने सरपंच की गला घोटकर उसकी निर्मम हत्या कर नक्सली जंगल की ओर फरार हो गए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्यशाला सशिम में संपन्न

जोहार छत्तीसगढ़–महासमुंद।

रायपुर विद्या भारती छत्तीसगढ़ प्रांत योजना अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्यशाला सभी जिलों में संपन्न हो रहा है। इसी कड़ी में कोरिया जिला के नगरीय एवं ग्रामीण विद्यालय के आचार्यों का दो दिवसीय कार्यशाला 25 एवं 26 जून को सरस्वती शिशु मंदिर सरभोका जिला कोरिया में संपन्न हुआ। इस कार्यशाला में कोरिया जिला के साथ साथ सरगुजा जिला, बलरामपुर जिला, सूरजपुर जिला के अप्रशिक्षित आचार्य, प्रधानाचार्य, प्राचार्य भी सामिल थे। 25 जून को उद्घाटन सत्र में नरेश जायसवाल प्रांत प्रमुख वनांचल शिक्षा सेवा न्यास छग एवं कोरिया जिला प्रभारी साथ में राजेश मिश्रा विभाग समन्वय जगदीश यादव जिला समन्वयक, कृष्णा प्रजापति प्राचार्य मंच में विराजमान थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्यशाला में 15 नगरीय विद्यालय से 65 पुरुष आचार्य एवं 36 महिलाएं कुल 101 की संख्या रही तथा 14 ग्रामीण विद्यालय से 30 पुरुष आचार्य और 27 महिलाएं कुल योग 57 की उपस्थिति रही। इस प्रकार कुल 158 आचार्य प्राचार्य ने कार्यशाला में भाग लिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के इस कार्यशाला में उद्घाटन एवं समापन को छोड़कर 6 काल खंडों के माध्यम से विभिन्न विषयों पर कार्यशाला संपन्न हुआ। समापन अवसर पर हनुमान प्रसाद अग्रवाल जिला प्रतिनिधि एवं नरेश जायसवाल प्रांत प्रमुख का सारगर्भित मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस कार्यशाला में राजेश मिश्रा, जगदीश यादव, प्रकाश साहू, मनोज दुबे, चौतराम नामदेव, ज्योत्सना सिंह आदि प्रशिक्षकों के द्वारा विषयों का प्रतिपादन हुआ। कार्यशाला में बैठक, आवास, भोजन, जलपान आदि व्यवस्था प्रकल्प के कार्यकर्ताओं ने किया।

सड़क पर मवेसियों का कब्जा

जोहार छत्तीसगढ़–बेमेतरा।

छेरकापुर के सड़को पर सुबह से साम तक मावेशी का व जैसे अन्य जगहों पर बैठे रहते हैं। बड़े गाड़ी, मोटरसायकिल वालों को होता है। आने जाने में परेशानी पशु मालिक भी जिम्मेदार है मावेशियों से हित साधनो के बाद इन्हें सड़कों पर आवारा घूमने के लिए इस तरह छोड़ दिया जाता है। जैसे मावेशियों से उनका कोई नाता न हो किसी भी प्रकार की दुघटना के बाद मावेशियों मालिक मुआवजा के लिए जानवरो पर दावा करते है ग्राम के सड़कों पर घूमते आवारा मावेशी वाहन चालाको व राहगीरों के लिए खतरा बन सकता है यह समस्या छेरकापुर व नवागढ़ मार्ग रोड पर दिखाई देती है बरसात शुरु होने के बाद भी सड़क पर मावेशियों का जमावड़ा बड़ गया है आये दिन होते रहते है हादसे नवागढ़ मार्ग रोड में साम होते ही मवेसियों का डेरा सड़क पर लग जाता है मोटरसायकिल में चलने वालों को भी बहुत हि परेशानी होती है छेकापुर से नवागढ़ मार्ग रोड पर बीचो बिच सडक पर ऐसे घूम रहे हैं मावेशी।

शासकीय स्कूल मऊ के छात्र-छात्राओं को बाल सुरक्षा पर आधारित अभिव्यक्ति अभियान के माध्यम से किया जागरूक एवं अपराध के प्रति सजग रहने का दिया संदेश

जोहार छत्तीसगढ़–बेमेतरा।

पुलिस अधीक्षक बेमेतरा धर्मेंद्र सिंह के निर्देशन एवं अति.पुलिस अधीक्षक बेमेतरा पंकज पटेल, अति,पुलिस अधीक्षक रामकुमार बर्मन, एसडीओपी बेरला तेजराम पटेल, एसडीओपी बेमेतरा राजीव शर्मा के मार्गदर्शन में जिले में थाना। चौकी प्रभारियों के द्वारा बाल सुरक्षा पर आधारित अभिव्यक्ति अभियान एवं चेतना अभियान के माध्यम से महिला शसक्तिकरण, महिला सुरक्षा, सायबर क्राईम एवं यातायात संबंधी जानकारी अभियान चलाया जा रहा हैं जिसके तहत् 28 जून 2022 को थाना चंदनू क्षेत्र अंतर्गत ग्राम मऊ शासकीय हाई स्कुल में छात्र/छात्राओ को थाना चंदनू प्रभारी निरीक्षक प्रमोद शर्मा, उप निरीक्षक अंजोर साहू एवं अन्य स्टाफ ने बताया कि किसी के भी बहकावे में न आने, यदि कोई अनजान व्यक्ति कोई खाने पीने का सामान दे या किसी भी प्रकार का कोई लालच दे। उसके झांसे में नहीं आने, तथा साइबर अपराध, चिटफंड, फर्जीकाल ठगी, एटीएम ठगी, ऑनलाईन ठगी, फेसबुक, से संबंधित अपराधों के संबंध में जानकारी दी गई। हमें सदैव जागरूक रहने और घटना घटित होने पर तत्काल पुलिस को सूचित करने अपील की गई। पुलिस आपके सहयोग के लिए बराबर तैयार है और उन्हे कहीं भी कोई तकलीफ नहीं आने देगी। वह निडर होकर जरूरत पर पुलिस का समुचित सहयोग ले। पुलिस हर समय मदद के लिए तैयार है। साथ ही यातायात के नियमों का हमेशा पालन किये जाने एवं सभी को हेलमेट पहनने के लिए प्रोत्साहित किया गया। साथ ही महिलाओ एवं बालिकाओं पर हो रहे लैंगिक शोषण के कारण एवं बचाव से संबंधित तथा महिलाओ पर हो रहे अपराध एवं मोबाइल से सम्बन्धित अपराध एवं उनके रोकथाम की जानकारी दी गई।

पुलिस ने नशा मुक्ति के खिलाफ अभियान चलाकर लोगों को किया जागरूक

जोहार छत्तीसगढ़–बेमेतरा।

पुलिस अधीक्षक बेमेतरा धर्मेंद्र सिंह के निर्देशन एवं अति.पुलिस अधीक्षक बेमेतरा पंकज पटेल, अति.पुलिस अधीक्षक रामकुमार बर्मन, एसडीओपी बेरला तेजराम पटेल, एसडीओपी बेमेतरा राजीव शर्मा के मार्गदर्शन में जिले में थाना, चौकी प्रभारियों के द्वारा नशा मुक्ति के खिलाफ अभियान चलाकर लोगो को जागरूक किया जा रहा है इस अभियान तहत 28 जून 2022 को थाना दाढी, नवागढ़ एवं चौकी देवकर स्टाफ उप निरीक्षक टीआर कोसिमा, सउनि सुभाष सिंह, प्रधान आरक्षक मोहन साहू, यागेश्वर देशमुख एवं अन्य स्टाफ के द्वारा दाढी के चौक चौराहो, ग्राम बचेडी के ग्रामीणों एवं नवागढ़ में आमजनों को बताया कि बीडी, सिगरेट,शराब,गांजा जैसे नशा शारीरिक समस्याओं के साथ ही आर्थिक और सामाजिक स्तर पर भी नुकसान का कारण बनता है। लोगो को नशा नहीं करने का संकल्प व इसके दुष्प्रभाव के बारे में भी बताया गया। नशे से ग्रसित व्यक्ति तनाव में रहता है और उसे मानसिक परेशानियां घेर लेती हैए इसके अलावा उसे स्वास्थ्य परेशानियां भी होती है और नशे में अपराध की ओर अग्रसर हो जाता है। क्योकि ऐसे ही व्यक्ति अपराधों को बढ़ावा देता है। इसलिए हमें नशे से दुर रहना चाहिए। गुडाखु, तंबाकु, गुटका के लगातार सेवन से मुह धीरे-धीरे कम खुलने लगता है जो कि कैंसर का कारण बनता है किसी भी प्रकार का नशा को छोड़ने के लिए व्यक्ति को दृढ संकल्पित होने की आवश्यकता है। इसके लिए युवाओं को आगे आकर समाज में जागरूकता लाने की आवश्यकता है ताकि समाज में सामाजिक मधुरता बना रहे। साथ ही बेमेतरा पुलिस द्वारा मादक पदार्थो की तस्करी करने वालो पर कड़ी नजर रखी जा रही है एवं अवैध शराब बिक्री करने वालो पर सूचना मिलते ही पुलिस द्वारा त्वरित कार्यवाही किया जा रहा है।

तहसील अधिकारी एवं कर्मचारी सामूहिक अवकाश पर रहे

अनुविभागीय अधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपा

जोहार छत्तीसगढ़–घरघोड़ा।

घरघोड़ा केंद्र के समान महंगाई भत्ता एवं केंद्र के समान गृह भाड़ा भत्ता की मांग को लेकर घरघोड़ा गए तहसील के अधिकारी एवं कर्मचारी 1 दिन का सामूहिक अवकाश लेकर हड़ताल पर रहे कर्मचारी भवन में प्रातः 10 बजे से ही अधिकारी एवं कर्मचारियों का जमावड़ा चालू हो गया।

सभी विभाग के अधिकारी और कर्मचारी बहुत बड़ी संख्या में एकत्र हुए सर्वप्रथम सभा को तहसील संयोजक संतोष पांडे ने संबोधित किया बताया कि पहली बार महंगाई भत्ता को मांग को लेकर अधिकारी एवं कर्मचारियों को सड़क पर आना पड़ा है जो कर्मचारी अधिकारियों का मूलभूत अधिकार है केंद्र के कर्मचारी एवं राज्य के कर्मचारी के लिए महंगाई अलग-अलग नहीं है तो फिर महंगाई भत्ता अलग-अलग क्यों, राजपत्रित अधिकारी संघ के अध्यक्ष केपी पटेल ने सभी को हर आह्वान में एकजुट रहने का आह्वान किया वरिष्ठ नेता अभिनव सिंह भी सभा को संबोधित किया मंगलेश्वर महंत ने सभी कर्मचारियों को फेडरेशन के आह्वान पर सत्र होने की बात कही रोहित डनसेना ज्ञापन का पाठ किया। मंच पर डिप्लोमा अभियंता संघ के कमलेश गुप्ता सुरेंद्र होता राजेंद्र महंत पूनम मित्तल, तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ के अध्यक्ष अश्वनी दर्शन,अनिल चेलक विनोद मैहर सुंदर मणि, विजय पंडा, महेंद्र साहू, संतोष सिंह, ममता पुरसेथ, मनोज प्रधान सूरज पैंकरा बलराम हरिश्चंद्र, रामकुमार वीर सिंह देवांगन, एवं हर विभाग से अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कर्मचारी भवन से रैली के माध्यम से तहसील कार्यालय पहुंच कर अनुभाग अधिकारी डिकेश पटेल जी को प्रदेश के मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया इस अवसर पर तहसीलदार अनंत एवं सोनी उपस्थित थे।

घरघोड़ा तहसील में समस्त कार्यालयों में ताला बंद है कोई भी काम नहीं हो रहा है कर्मचारियों एवं अधिकारियों में महंगाई भत्ता ना मिलने पर बहुत आक्रोश देखा गया 17: महंगाई भत्ता अधिकेंद्र से कम है जुलाई माह में संभवत केंद्र महंगाई भत्ता घोषित कर सकता है जिससे और कमी हो जाएगी इसलिए केंद्र की घोषित तिथि से छत्तीसगढ़ के अधिकारियों कर्मचारियों को महंगाई भत्ता दिया जाए। अगर अभी भी शासन केंद्र के समान महंगाई भत्ता घोषित नहीं करती है तो 25 जुलाई से 29 जुलाई तक 5 दिनों का हड़ताल पूरे प्रदेश में किया जाएगा।

कई भाषाओं में काम करने से मैं समृद्ध हुई हूं:वामीका गब्बी

मॉडर्न लव: मुंबई और माई जैसी सीरीज में नजर आ चुकीं अभिनेत्री वामिका गब्बी ने हिंदी, तमिल, मलयालम, गुजराती और पंजाबी जैसी कई भाषाओं की फिल्मों में काम करने की बात कही है। अभिनेत्री वामिका गब्बी कहती हैं कि, अनुभव ने उन्हें एक कलाकार के रूप में समृद्ध किया है। वामीका कहती हैं, इसने मुझे निश्चित रूप से विभिन्न संस्कृतियों को समझा है और यह वास्तव में एक कलाकार के रूप में मेरे अनुभव को बढ़ाता है।

उन्होंने कहा कि, जब भी वह किसी विशेष भाषा में कोई फिल्म कर रही होती हैं, तो अभिनेत्री इस बात का बारीकी से निरीक्षण करती हैं कि उस संस्कृति के लोग खुद को कैसे आगे बढ़ाते हैं।

देवोलीना भट्टाचार्जी आने वाली फिल्म कूकी के लिए बनीं पत्रकार

टीवी अभिनेत्री देवोलीना भट्टाचार्जी, जो वर्तमान में साथ निभाना साथिया 2 में नजर आ रही हैं। इसी के साथ अभिनेत्री प्रणब जे डेका द्वारा निर्देशित आगामी फिल्म कुकी में एक पत्रकार की भूमिका निभाने के लिए पूरी तरीके से तैयार हैं।

अभिनेत्री देवोलीना भट्टाचार्जी कहती हैं, मैं इस फिल्म का हिस्सा बनने के लिए उत्साहित हूं। मैं नवनीता सेन के रूप में दिखूंगी, जो पेशे से एक पत्रकार हैं। यह पहली बार है जब मैं एक पत्रकार की भूमिका निभाने जा रही हूं। यह एक बहुत ही दिलचस्प किरदार है। मेरे दर्शक फिल्म में एक नया मुझे देखेंगे। फिल्म की कहानी एक बलात्कार पीड़िता पर आधारित है।

गोपी बहू का प्रतिष्ठित किरदार निभाने और बाद में रियलिटी टीवी शो बिग बॉस में भाग लेने के लिए अपार लोकप्रियता हासिल करने वाली देवोलीना को लगता है कि पत्रकार हमारे समाज के बहुत महत्वपूर्ण सदस्य हैं।

देवोलीना भट्टाचार्जी कहती हैं, पत्रकारों के प्रति मेरा हमेशा बहुत आभार रहा है। मुझे लगता है कि वे हमारे समाज के बहुत महत्वपूर्ण सदस्य हैं।

वे वास्तव में हमें हर महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ अद्यतन और शिक्षित रहने में मदद करते हैं। मुझे लगता है कि कई बार एक पत्रकार एक पीड़ित के लिए एक मामला जीतने और न्याय पाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि पेशा एक बहुत ही जिम्मेदार है, मुझे लगता है कि व्यक्ति इसे उठा रहे हैं पेशे को समर्पित और वफादार रहना चाहिए क्योंकि उनके पास हमेशा कई महत्वपूर्ण चीजों की महत्वपूर्ण पहुंच होती है।

कूकी में दीपानिता शर्मा, राजेश तैलंग, स्वास्तिका मुखर्जी, उदयन दुआरा भी हैं। इसकी शूटिंग असम के दो शहरों तेजपुर और गुवाहाटी में की जाएगी।

तापसी की बहन शगुन पन्नू ग्लैमर के मामले में देती हैं अभिनेत्रियों को भी मात

बॉलीवुड अभिनेत्री तापसी पन्नू आज के समय में एक जानी-मानी अभिनेत्री बन चुकी हैं। वह अक्सर ही अपनी खूबसूरती और बेहतरीन अदाकारी की वजह से सुर्खियों में बनी रहती हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि तापसी पन्नू की एक बहन भी हैं ? जो खूबसूरती के मामले में किसी भी एक्ट्रेस से कम नहीं हैं। आज हम आपको तापसी की खूबसूरत बहन शगुन से रूबरू कराएगें।

दरअसल तापसी पन्नू की बहन शगुन ने हाल ही में सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर किया हैं। जिसमें वे बेहद ही खूबसूरत दिखाई दें रही हैं। आपको बता दें कि इन दिनों तापसी की बहन शगुन फ्रांस में हैं वहीं से उन्होंने अपना यह वीडियो शेयर किया हैं। अपने इस वीडियो में शगुन पिंक कलर के क्रॉप टॉप और प्रिंटेडशॉर्ट्स पहना हुआ हैं साथ ही उन्होंने ग्रे डेनिम शर्ट पहनी हुई है। तापसी की बहन शगुन के इस वीडियो को लोग काफी पंसद कर रहे हैं।

आपको बताते चले कि तापसी पन्नू की बहन शगुन पन्नू बेशक से अभी तक किसी भी फिल्म में नजर न आई हो लेकिन असल जीवन में काफी बोल्ड और ग्लैमरस हैं। उनका स्टाइल किसी भी अभिनेत्री से कम नहीं हैं। उनका अंदाज भी अपनी बहन तापसी के जैसा ही हैं और दोनों बहनों की आदतें भी एक-दूसरे से काफी मिलती जुलती हैं। वहीं बात करें दोनों बहनों की बॉन्डिंग की तो दोनों बहनें काफी क्लोज हैं और दोनों एक साथ मुंबई में रहती हैं। तापसी अपनी छोटी बहन से बहुत प्यार करती हैं और एक सहेली की तरह दोनों बहने ही आपस में अपनी सारी बातें शेयर करती हैं। वहीं तापसी और शगुन को अक्सर साथ में बाहर घूमते हुए भी कई बार स्पॉट किया गया हैं।

बॉलीवुड अभिनेत्री तापसी पन्नू की बहन शगुन पन्नू सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव रहती हैं और अपनी वीडियो, फोटोज शेयर करती हैं।

वजन कम करने में कैसे मदद करती है ग्रीन टी?

जब बात फिटनेस और स्वास्थ्य की आती है तो ग्रीन टी का नाम लगभग हर किसी की जुबान पर आता है। इसका मुख्य कारण यह है कि इसमें बायोएक्टिव पदार्थों के साथ-साथ एंटी-ऑक्सीडेंट गुण मौजूद होते हैं, जो मेटाबॉलिज्म तेज करके शरीर की अतिरिक्त चर्बी को कम करने समेत कई तरह के स्वास्थ्य लाभ देने में सक्षम है। आइए आज हम आपको बताते हैं कि वजन घटाने में ग्रीन टी का सेवन कैसे मदद करता है। विशेषज्ञों ने बताया कि ग्रीन टी शरीर में ग्लूकोसिडेज, पैंक्रियाटिक लाइपेज और एमाइलेज जैसे एंजाइमों को रोकती है, जो आंतों में कार्बोहाइड्रेट और फैट के निर्माण के लिए जिम्मेदार होते हैं। ऐसे जटिल अणुओं को कम करके ग्लूकोज और फैटी एसिड जैसे सरल अणुओं का अवशोषण भी कम हो जाता है। वहीं, वजन घटाने के लिए ग्रीन टी की प्रभावकारिता भिन्न होती है और यह चर्चा का विषय है, लेकिन शरीर के लिए ग्रीन टी सबसे कम दुष्प्रभावी है। ग्रीन टी में जरूरी बायोएक्टिव पदार्थ जैसे कैफीन और कैटेचिन होते हैं, जो शरीर की मेटाबॉलिज्म दर को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। तेज मेटाबॉलिज्म दर शरीर की अधिक कैलोरी बर्न करके ऊर्जा को बढ़ाती है, जिस कारण वजन घटाने में मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त, यह शरीर के ब्लड सर्कुलेशन में एंटी-ऑक्सीडेंट के स्तर को भी बढ़ाता है। अध्ययनों के अनुसार, ग्रीन टी के सेवन से रोजाना 75-100 कैलोरी बर्न की जा सकती है।

कैलोरी को बर्न करने में ग्रीन टी काफी प्रभावी मानी जाती है, इसलिए आजकल विभिन्न वजन घटाने वाले सप्लीमेंट्स में ग्रीन टी का अर्क मौजूद होता है। हालांकि, इन सप्लीमेंट्स का सेवन बिना डॉक्टर की सलाह के करना गलत है। आप चाहें तो अपने शरीर की अतिरिक्त कैलोरी को तेजी से बर्न करने के लिए अपने रोजाना के वर्कआउट सेशन से पहले एक कप ग्रीन टी का सेवन कर सकते हैं।

पूरे साल किसी भी मौसम में ये कपड़े पहन सकती हैं महिलाएं

मौसम बदलता रहता है और ऐसे में हर बार उसके अनुसार अपनी अलमारी को अपग्रेड करना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। अगर आप भी हर बार अपनी अलमारी को अपग्रेड करने का झंझट नहीं चाहती हैं तो आइए आज हम आपको कुछ ऐसे कपड़ों के बारे में बताते हैं, जिन्हें आप जनवरी से लेकर दिसंबर तक पहन सकते हैं। इससे हमारा मतलब है कि उन कपड़ों को आप किसी भी मौसम में पहन सकते हैं।

जींस- जींस एक ऐसा बॉटम वीयर है, जिसे आप किसी भी मौसम में पहन सकती हैं, इसलिए अपनी अलमारी में हमेशा एक ब्लू डेनिम जींस जरूर रखें। इसे आप गर्मियों के दौरान लूज ग्राफिक टॉप या क्रॉप और व्हाइट स्नीकर्स के साथ पेयर करके पहन सकती हैं। वहीं, मानसून के दौरान पफ स्लीव्स के साथ डेनिम ब्लू जींस को पहन सकती हैं। सर्दियों में ब्लू डेनिम जींस को फजी स्वेटर और एंकल लेंथ बूट्स के साथ पेयर करके पहन सकती हैं।

स्कर्ट - मैक्सी स्कर्ट से लेकर प्लेड स्कर्ट तक हर मौसम में और किसी भी अवसर पर पहना जा सकता है, लेकिन आपको इन्हें सही तरीके से स्टाइल करना आना चाहिए। उदाहरण के लिए आप मैक्सी स्कर्ट को प्लेन शर्ट को टक इन करके और बूट्स के साथ पेयर करके पहन सकती हैं। इसके अतिरिक्त, डेनिम स्कर्ट के साथ प्लेन बटन डाउन शर्ट पहन सकती हैं। हाई वेस्ट स्कर्ट और प्लेड स्कर्ट को आप तरह-तरह के तरीके से पहन सकती हैं।

ड्रेसेस- ड्रेसेस भी जनवरी से लेकर दिसंबर तक कभी भी पहनी जा सकती हैं। सर्दियों के दौरान ड्रेस को काले रंग की लैदर जैकेट और जूतों के साथ टिमअप करके पहना जा सकता है। वहीं, गर्मियों और मानसून में ड्रेस को सैंडल या फ्लिप-फ्लॉप के साथ पहना जा सकता है, लेकिन इस दौरान लाइट फैशन एसेसरीज भी जरूर पहनें।

खेल

मलेशिया ओपन बैडमिंटन चैंपियनशिप

पीवी सिंधु प्री क्वार्टर फाइनल में पहुंचीं साइना नेहवाल पहले राउंड में बाहर

मलेशिया ओपन सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट के विमंस सिंगल्स में पीवी सिंधु प्री क्वार्टर फाइनल में पहुंच गई हैं, वहीं साइना नेहवाल और बी सुमित रेड्डी और अश्विनी पोनप्पा की मिक्स्ड जोड़ी टूर्नामेंट से बाहर हो गई है।

पीवी सिंधु ने थाईलैंड की पोर्नपावी चोचुवोंग को 21-13, 21-17 से हराकर अगले दौर में अपना स्थान पक्का किया। उन्होंने पोर्नवावी से पहला गेम आसानी से 21-13 से जीत लिया। दूसरे गेम में पोर्नपावी ने सिंधु को चुनौती दी। शुरुआत में पोर्नपावी आगे रहीं। उसके बाद सिंधु ने वापसी करते हुए आखिर में इस गेम को भी 21-17 से जीत कर मैच को अपने पक्ष में कर लिया। वहीं साइना नेहवाल ने पहले राउंड में आइरिस वांग ने 21-11, 21-17 से हरा कर टूर्नामेंट से बाहर का रास्ता दिखाया। साइना नेहवाल को USA की आइरिस वांग ने 21-11, 21-17 से हरा कर टूर्नामेंट से बाहर का रास्ता दिखाया।

साईं प्रणीत और समीर वर्मा भी हो चुके हैं बाहर

भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों बी साई प्रणीत और समीर वर्मा को मंगलवार को मलेशिया ओपन सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष सिंगल्स के पहले ही राउंड के कड़े मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा। प्रणीत को दुनिया के छठे नंबर के खिलाड़ी इंडोनेशिया के एंथनी सिनिसुका गिनटिंग ने हराया।

मैंने टेक्टर को एक बैट दिया है, ताकि वह और छक्के लगाएं : पांड्या

डबलिन । आयरलैंड के खिलाफ टी20 श्रंखला में भारतीय टीम की अगुवाई कर रहे हार्दिक पांड्या ने आयरिश बल्लेबाज हैरी टेक्टर की तारीफ करते हुए कहा कि वह उन्हें आईपीएल में देखना चाहते हैं। 22 वर्षीय टेक्टर ने भारत के खिलाफ खेले गये वर्षाबाधित पहले टी20 में 33 गेंद पर नाबाद 64 रन बनाकर आयरलैंड को 12 ओवर में 108 रन तक पहुंचाया, हालांकि भारत ने यह लक्ष्य 9.2 ओवर में ही हासिल कर लिया।

पांड्या ने मैच के बाद संवाददाता सम्मेलन में टेक्टर की जमकर तारीफ़ की और कहा कि वह उन्हें भविष्य में आईपीएल में देखना चाहते हैं।

पांड्या ने कहा, उन्होंने कई शानदार शॉट खेले। वह सिर्फ 22 साल के हैं। मैंने उन्हें एक बल्ला भेंट किया है, ताकि वह कुछ और छक्के लगाएं और शायद एक आईपीएल कॉन्ट्रैक्ट भी हासिल करें। उनके साथ मेरी शुभकामनाएं हैं। इससे पहले टेक्टर आईसीसी अंडर-19 विश्व कप में भी अपने शानदार प्रदर्शन से लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच चुके हैं।

एक नजर

ओलंपिक हॉकी खिलाड़ी वरिंदर सिंह का निधन

जालंधर । ओलंपिक हॉकी खिलाड़ी वरिंदर सिंह का आज पंजाब के जालंधर में निधन हो गया। वह कुछ समय से अस्वस्थ थे।

सोलह मई-1947 को जन्मे ध्यानचंद पुरस्कार प्राप्त वरिंदर ने म्यूनिख में 1972 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में कांस्य पदक जीता था। उन्होंने 1976 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में भी भाग लिया।

सुरजीत हॉकी सोसाइटी ने वरिंदर के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा, हम सभी सोसाइटी सदस्य ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि परिवार के सदस्यों को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें और दिवंगत आत्मा को शाश्वत शांति प्रदान करें।

राष्ट्रमंडल खेलों से पहले राष्ट्रीय कैंप पहुंची पुरुष टीम

नयी दिल्ली । भारतीय पुरुष हॉकी टीम यूरोप में बेल्जियम और नीदरलैंड के खिलाफ एफआईएच प्रो लीग में शानदार प्रदर्शन के बाद बेंगलुरू के राष्ट्रीय कैम्प लौट आई है।

हॉकी इंडिया ने बेंगलुरू के भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) सेंटर में राष्ट्रीय कैंप के लिये 31 खिलाड़ियों को नामित किया है, जो इंग्लैंड के बर्मिंघम में होने वाले 2022 राष्ट्रमंडल खेलों के लिये रवाना होने से पहले 23 जुलाई तक यहां तैयारी करेंगे।

भारतीय टीम के कोच ग्राहम रीड ने कैंप के बारे में कहा, यूरोप मे एफआईएच प्रो लीग मैचों के बाद खिलाड़ियों को छह दिन का अवकाश दिया गया था ताकि वह अपने परिवार के साथ समय बिता सकें। मेरा मानना है कि इस ब्रेक ने खिलाड़ियों को मानसिक और शारीरिक तौर पर तरोताज़ा होकर वापस लौटने में मदद की है।

उन्होंने कहा, हम अगले तीन हफ्ते अपने प्रदर्शन को सुधारने पर ध्यान देंगे। एफआईएच प्रो लीग में हमारे पास सर्वश्रेष्ठ टीमों के खिलाफ खेलने का अवसर था। मैंने कुछ ऐसे पहलुओं की शनाख्त की है जहां हम सुधार कर सकते हैं। हम बेंगलुरु में आगामी हफ्तों में इसी पर ध्यान देंगे। राष्ट्रमंडल खेल एक बड़ा आयोजन है जहां विश्व रैंकिंग पॉइंट भी दांव पर लगे हैं, इसलिये हम बर्मिंघम में बेहतरीन प्रदर्शन की ओर देख रहे हैं।

विंबलडन में उलटफेर

पहले दौर में हारीं 23 बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन सेरेना विलियम्स, नडाल जीते

लंदन। दुनिया के सबसे पुराने टेनिस टूर्नामेंट में मंगलवार रात पहले ही दौर में बड़ा उलटफेर देखने को मिले। यहां 23 ग्रैंड स्लैम चैंपियन सेरेना विलियम्स हारकर बाहर हो गईं। वहीं, दुनिया की नंबर-1 महिला टेनिस खिलाड़ी इगा स्वातेक विम्बलडन के दूसरे राउंड में पहुंच गईं। पोलैंड की स्वातेक ने क्रोएशिया की जाना फेट को महज 74 मिनट में 6-0, 6-3 से मात दी।

5वीं सीड मारिया सक्कारी, 12वीं सीड जेलेना ओस्तापेंको, 13वीं सीड बारबरा क्राजिकोवा, चौथी सीड पाउला बाडोसा, पूर्व नंबर-1 सिमोना हालेप, पूर्व चैंपियन पेत्रा क्विातोवा और 18 साल की कोको गॉफ दूसरे राउंड में पहुंच गईं।

पुरुष सिंगल्स में एलेक्स डि मिनॉर, स्टीव जॉनसन, डेविड गॉफिन, जैक सॉक, मैक्केंजी मैकडोनाल्ड, क्रिस्टियन गेरिन, रिचर्ड गास्केट ने भी दूसरे राउंड में जगह बनाई।

इस बीच, पिछली बार के रनरअप इटली के मातेओ बेरेटिनी को कोरोना हो गया और वे टूर्नामेंट से हट गए। इतना ही नहीं, टूर्नामेंट के कुछ मैच सस्पेंड करने पड़े। जबकि कुछ कैंसिल हुए।

चैंपियनशिप की नौवीं सीड खिलाड़ी गरबाइन मुगुरुजा को उलटफेर का शिकार होना पड़ा है। उन्हें जर्मनी की गैर वरीय खिलाड़ी जी मिनेन ने 6-4 से हराया।

सीरीज पर वेस्टइंडीज का कब्जा

वेस्टइंडीज ने दूसरे टेस्ट में बांग्लादेश को 10 विकेट से हराया, काइल मेयर्स रहे मैन ऑफ द सीरीज

वेस्टइंडीज ने दो टेस्ट मैचों की घरेलू सीरीज के सेंट लूसिया में खेले गए अखिरी मैच में बांग्लादेश को 10 विकेट से हराकर सीरीज 2-0 से अपने नाम कर ली है। पहले टेस्ट में वेस्टइंडीज ने 7 विकेट से जीत दर्ज की थी। मैच के चौथे दिन बांग्लादेश ने आखिरी पारी में विंडीज के सामने जीत के लिए मात्र 13 रनों का लक्ष्य रखा था, जिसे टीम ने बिना कोई विकेट खोए हासिल कर लिया। वेस्टइंडीज के लिए इस मैच में जीत के हीरो काइल मेयर्स रहे, जिन्होंने पहली पारी में 146 रन बनाकर वेस्टइंडीज को अहम बढ़त दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस सीरीज में वे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज भी रहे। बांग्लादेश के खिलाफ इस सीरीज में उन्होंने 76.50 की औसत से 153 रन बनाए। उन्हें मैन ऑफ द सीरीज के खिताब से नवाजा गया। काइल मेयर्स ने पहली पारी में 146 रन बनाकर वेस्टइंडीज को अहम बढ़त दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बांग्लादेश ने चौथे दिन 54 रन पर 4 विकेट खोए दिए। चौथे दिन की शुरुआत बांग्लादेश ने 6 विकेट के नुकसान पर 132 रनों से की थी। 148 के स्कोर पर अल्जारी जोसेफ ने मेहदी हसन को आउट कर बांग्लादेश को दिन का पहला झटका दिया।

पुलिस विभाग में बड़ा फेरबदल

5SI, 8 ASI, 5 हेड कॉन्स्टेबल और 29 कॉन्स्टेबल का तबादला, 4 TI भी बदले गए

मुंगेली। छत्तीसगढ़ के मुंगेली जिले में पुलिस विभाग में बड़ा फेरबदल हुआ है। यहां एक साथ 51 पुलिसकर्मियों का ट्रांसफर किया गया है।

जिसमें 4 टीआई,5 एसआई,8 एएसआई,5 प्रधान आरक्षक और 29 आरक्षक शामिल हैं। इस संबंध में जिले के एसपी चंद्रमोहन सिंह ने आदेश भी जारी कर दिया है।

जारी किए गए आदेश के मुताबिक, रक्षित केंद्र मुंगेली से निरीक्षक गौरव पांडे को सिटी कोतवाली मुंगेली भेजा गया है। गौरव यहां अब टीआई बनाए गए हैं। कोतवाली थाने से केशरपराग बंजारा को यातायात शाखा भेज दिया गया है। अब तक लोरमी थाना प्रभारी के जिम्मेदारी संभाल रहे एन. बी सिंह को एसपी कार्यालय में रीडर की जिम्मेदारी दी गई है। इसी प्रकार विश्वजीत सिंह को यातायात शाखा से भेजकर सरगांव थाना प्रभारी बनाया गया है।

निम्नलिखित अधिकारी/कर्मचारियों को प्रशासनिक दृष्टिकोण से आगामी आदेश पर्यन्त तत्काल प्रभाव से उनके नाम के सम्मुख दर्शित स्थान में अस्थाई रूप से स्थानांतरित कर पदस्थ किया जाता है :-

क्र.	पदनाम/नाम	वर्तमान पदस्थापना	नवीन पदस्थापना
1	2	3	4
1	निरीक्षक गौरव पाण्डे	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना प्रभारी सिटी कोतवाली मुंगेली
2	निरीक्षक केशरपराग बंजारा	थाना प्रभारी सिटी कोतवाली मुंगेली	प्रभारी यातायात शाखा
3	निरीक्षक विश्वजीत सिंह	प्रभारी यातायात शाखा	थाना प्रभारी सरगॉव
4	निरीक्षक एन०बी० सिंह	थाना प्रभारी लोरमी	रीडर पुलिस अधीक्षक
5	उप निरी० प्रमोद डनसेना	प्रभारी जिला विशेष शाखा	थाना प्रभारी लोरमी
6	उप निरी० अमित कौशिक	थाना प्रभारी सरगॉव	प्रभारी जिला विशेष शाखा
7	उप निरी० राजकुमार साहू	थाना लोरमी	थाना सरगॉव
8	उप निरी० युवराज साहू	चौकी प्रभारी खुड़िया	थाना लोरमी
9	उप निरी० महाशिव धुर्वे	थाना लोरमी	थाना लालपुर
10	सउनि तेजराम वर्मा	थाना सरगॉव	चौकी प्रभारी खुड़िया
11	सउनि दिवाकर सिंह	थाना जरहागॉव	थाना लोरमी
12	सउनि परशुराम पैकरा	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना जरहागॉव
13	सउनि कालूलाल दिवाकर	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना लालपुर
14	सउनि [illegible]	थाना लोरमी	प्रभारी पुलिस कंट्रोल रूम
15	सउनि विलायत हुसैन	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना लोरमी
16	सउनि सुशील कुमार [illegible]	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना सिटी कोतवाली मुंगेली
17	सउनि [illegible] सिंह राजपूत	थाना लालपुर	रक्षित केन्द्र मुंगेली
18	प्र०आर० 64 [illegible]	थाना लालपुर	चौकी खुड़िया
19	प्र०आर० 177 मुकेश धुर्वे	प्रभारी शौर्य पुलिस पेट्रोल पंप एवं थाना सिटी कोतवाली मुंगेली	चौकी खुड़िया
20	प्र०आर० 55 विनय सिंह राजपूत	थाना सरगॉव	रक्षित केन्द्र मुंगेली
21	प्र०आर० 346 दालीराम ध्रुव	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना सरगॉव
22	प्र०आर० 33 अजय सिंह [illegible]	थाना जरहागॉव	प्रभारी शौर्य पुलिस पेट्रोल पंप
23	आर० 247 लक्ष्मन सिंह ध्रुव	थाना लोरमी	शौर्य पुलिस पेट्रोल पंप
24	आर० 377 नारायण साहू	रक्षित केन्द्र मुंगेली	शौर्य पुलिस पेट्रोल पंप
25	आर० 105 पारसमणी भास्कर	थाना सरगॉव	यातायात शाखा
26	आर० 137 अजीत सिंह	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना सरगॉव
27	आर० 386 सत्यम सिंह राजपूत	रक्षित केन्द्र मुंगेली	यातायात शाखा
28	आर० 410 राजेन्द्र कुमार भारती	रक्षित केन्द्र मुंगेली	यातायात शाखा
29	आर० 185 मनोज टंडन	थाना लोरमी	रक्षित केन्द्र मुंगेली
30	आर० 193 सोनू बांगड़े	थाना लोरमी सीसीटीएनएस	रक्षित केन्द्र मुंगेली
31	आर० 182 सूर्यकांत धृतलहरे	थाना लोरमी	रक्षित केन्द्र मुंगेली
32	आर० 308 [illegible]	थाना लोरमी	रक्षित केन्द्र मुंगेली
33	आर० 405 दीपक कुमार [illegible]	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना लोरमी
34	आर० 421 [illegible]	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना लोरमी
35	आर० 375 [illegible] कुमार [illegible]	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना लोरमी
36	आर० 380 राहुल ठाकुर	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना लोरमी
37	आर० 381 अश्वनी कुमार टंडन	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना लोरमी
38	आर० 395 [illegible] कुमार [illegible]	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना लोरमी
39	आर० 374 [illegible] कुमार [illegible]	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना सिटी कोतवाली मुंगेली
40	आर० 400 [illegible]	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना सिटी कोतवाली मुंगेली
41	आर० 378 [illegible] प्रभाकर	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना [illegible]
42	आर० 388 भंवर लाल ध्रुव	रक्षित केन्द्र मुंगेली	चौकी [illegible]
43	आर० 401 विजय कुमार यादव	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना लालपुर
44	आर० 416 अभिजीत सिंह ठाकुर	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना पथरिया
45	आर० 351 [illegible]	रक्षित केन्द्र मुंगेली	पुलिस कंट्रोल रूम
46	आर० 382 नरेश कुमार दिवाकर	रक्षित केन्द्र मुंगेली	पुलिस कंट्रोल रूम
47	आर० 399 [illegible] साहू	रक्षित केन्द्र मुंगेली	पुलिस कंट्रोल रूम
48	आर० 414 अमित कुमार [illegible]	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना सरगॉव
49	आर० 415 [illegible] यादव	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना जरहागॉव
50	आर० 148 [illegible] सिंह ठाकुर	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना जरहागॉव
51	आर० 411 [illegible] कुमार [illegible]	रक्षित केन्द्र मुंगेली	थाना जरहागॉव

उदयपुर की घटना के विरोध में जगदलपुर शहर बंद

हिंदू समाज ने किया बंद का ऐलान, भाजयुमो ने जलाया हत्यारों का पुतला

जगदलपुर। राजस्थान के उदयपुर में हुई दर्जी की हत्या के विरोध में युवा मोर्चा ने जगदलपुर में जिहादी कट्टरपंथी हत्यारों का पुतला दहन किया है। साथ ही हत्यारों को कड़ी से कड़ी सजा देने की मांग भी की है। इधर, हिंदू समाज ने इस घटना के विरोध में एक दिवसीय जगदलपुर शहर बंद करने का ऐलान किया है। इस संबंध में बस्तर चेंबर आफ कॉमर्स और बस्तर परिवहन संघ से सहयोग के लिए समर्थन मांगा गया है। हिंदू समाज ने सभी व्यापारिक प्रतिष्ठानों स्कूल, कॉलेजों और सभी अशासकीय संस्थाओं से अपने-अपने प्रतिष्ठान बंद कर हिंदू समाज के इस महाबंद को सफल बनाने अपील की है। भाजयुमो जिला अध्यक्ष अविनाश श्रीवास्तव ने कहा कि, जिस प्रकार से राजस्थान में जिहादियों ने एक हिंदू कन्हैयालाल की निर्मम हत्या की है, ऐसा प्रतीत होता है कि देश के हिंदुओं के प्रति ये कट्टरपंथी किस प्रकार से अपने जहन में जहर भरे हुए हैं। हिंदू की हत्या के लिए यह किसी भी स्तर पर जा सकते हैं। अविनाश ने कहा कि, कन्हैयालाल की हत्या के बाद हत्यारों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जान से मारने की धमकी दी है।

एक नजर

अंबिकापुर में हादसा, भिलाई के कारोबारी भाइयों की मौत

तेज रफ्तार ट्रक ने कार को मारी टक्कर; 3 भाइयों की हालत गंभीर, अस्पताल में भर्ती

सरगुजा। छत्तीसगढ़ के सरगुजा में बुधवार सुबह तेज रफ्तार ट्रक और कार की टक्कर हो गई। हादसे में कार सवार कारोबारी दो भाइयों की मौत हो गई। जबकि 3 भाइयों की हालत गंभीर है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने तीनों घायलों को उदयपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। हादसा उदयपुर थाना क्षेत्र में हुआ है।

जानकारी के मुताबिक, भिलाई के सुपेला निवासी हरिंदर यादव (57) अपने भाई सभापति यादव (56), राजेंद्र प्रसाद यादव, राकेश यादव और वीरेंद्र यादव के साथ उत्तर प्रदेश के गोरखपुर से लौट रहे थे। बुधवार सुबह करीब 5.45 बजे तारा बैरियर से करीब 200 मीटर आगे बिलासपुर रोड पर पहुंचे थे कि तेज रफ्तार ट्रक ने सामने से टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार के परखच्चे उड़ गए। सुबह-सुबह हादसा हुआ देख लोगों ने पुलिस को सूचना दी। इसके बाद सभी को कड़ी मशक्कत के बाद किसी तरह कार से बाहर निकाला गया। शव बुरी तरह से अंदर फंसे हुए थे। हादसे में मौके पर ही हरिंदर यादव (57) और सभापति यादव की मौत हो चुकी थी। दोनों भाई भिलाई स्थित बबीना बार के संचालक थे।

स्वरोजगार ऋण के लिए आवेदन 10 जुलाई तक आमंत्रित

कोंडागांव। जिले के कार्यपालन अधिकारी जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति द्वारा जारी विज्ञप्ति अनुसार अनुसूचित जनजाति के लिए, आदिवासी स्वरोजगार (बैंक प्रवर्तित योजना) ट्रैक्टर ट्राली, स्मॉल बिजनेस योजना, महिला सशक्तिकरण योजना, माइक्रो क्रेडिट योजना, गुड्स कैरियर, टर्म लोन व अनुसूचित जाति के लिए अंत्योदय स्वरोजगार, व्यक्तिगत व समूह ऋण के लिए इच्छुक उम्मीदवारों को बैंक प्रवर्तित ऋण दिया जाना है। ऋण आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 10 जुलाई निर्धारित है। इस संबंध में इच्छुक हितग्राही कलेक्टोरेट के प्रथम तल कक्ष नंबर 80 जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति मर्यादित से ऋण आवेदन निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं, हितग्राही की आयु 18 से 50 वर्ष निर्धारित की गई है।

सेवानिवृत्ति पर बीएसपी प्रबंधन ने दी भावभीनी विदाई

भिलाई । सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र की सेवा से जून, 2022 माह में सेवानिवृत्त हो रहे कार्यपालकों को 28 जून, 2022 को इस्पात भवन के निदेशक प्रभारी सभागार में आयोजित समारोह में भावभीनी विदाई दी। इस अवसर पर भिलाई इस्पात संयंत्र के निदेशक प्रभारी अनिर्बान दासगुप्ता तथा कार्यपालक निदेषक प्रभारी (कार्मिक एवं प्रषासन), के के सिंह, ऑफिसर्स एसोसिएषन के अध्यक्ष व सेफी चेयरमेन एन के बंछोर उपस्थित रहे। विदा होने वाले इस्पात बिरादरी को संयंत्र प्रबंधन ने उनके योगदान को रेखांकित करते हुए उनके स्वस्थ एवं सुखी जीवन की कामना की।

उदयपुर हत्याकांड के विरोध में हिंदू समाज का नगर बंद 30 जून को

जगदलपुर । राजस्थान के उदयपुर में दो आतंकी मुस्लिमों द्वारा धोखे से एक हिंदू टेलर कन्हैयालाल की हत्या कर दी गई और उनके द्वारा हत्या का वीडियो भी बनाया गया। जिसके बाद से पूरे देश में इस विडियो और हत्या की भर्त्सना की जा रही है। इसी जिहादी आतंकी घटना के विरोध में बस्तर के हिंदू संगठनों में भी रोष व्याप्त है, इस घटना के विरोध में तथा जिहादी मानसिकता के विरुद्ध एक प्रतीकात्मक विरोध प्रदर्शन के लिए कल 30 जून को हिंदू समाज ने नगर बंद का आह्वान किया है। हिंदू समाज ने देश के वर्ग विशेष में बढ़ रही मजहबी कट्टरता पर चिंता जताते हुए सभी समाज के सभी वर्गों को आगे आकर ऐसी घटना की निंदा करने की अपील की है, तथा 30 जून को अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर सभ्य समाज के साथ खड़ा होने की अपील की है। नगर बंद का ज्ञापन पुलिस एवं प्रशासन को सौंपा गया है। उल्लेखनीय है कि इस आतंकी घटना को अंजाम देने वाले मोहम्मद रियाज अंसारी और गौस मोहम्मद नामक दो मुस्लिमों ने हिंदू टेलर कन्हैया लाल को धोखे से केवल इसलिए मार डाला क्योंकि मृतक कन्हैयालाल ने अपनी फेसबुक प्रोफाइल में नूपुर शर्मा का फोटो लगा रखी था। दोनों मुस्लिम युवकों ने इस नृशंस हत्या की न केवल वीडियो ग्राफी की बल्कि इसी वीडियो के जरिए उन्होंने हत्या की बात कबूलते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भी सर कलम करने की धमकी दी थी।

निगम क्षेत्र में बनेगा भिलाई बिजनेस टॉवर

भिलाईनगर । नगर पालिक निगम भिलाई द्वारा जी.ई. रोड के किनारे संजय नगर सुपेला में वर्क नियर होम के उद्देश्य को लेकर भव्य भिलाई बिजनेस टॉवर का निर्माण करने की महापौर परिषद द्वारा सैद्धांतिक स्वीकृति प्रदान कर शहर के विकास में एक नये अध्याय कि शुरूवात की है।

महापौर परिषद की बैठक महापौर नीरज पाल की अध्यक्षता अपर आयुक्त अशोक द्विवेदी एवं परिषद के सदस्यों की उपस्थिति में संपन्न हुई।

पीसीसी चेयरमैन मोहन मरकाम अध्यक्ष की सफलता एवं उपलब्धियों के 3 वर्ष हुए पूरे, जिला हॉस्पिटल पहुंचकर कांग्रेस जनों ने मरीजों को बांटे फल

बिलासपुर । छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मोहन मरकाम के कार्यकाल के तीन वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 29 जून को जिला कांग्रेस कमेटी (शहर/ग्रामीण) और शहरीय ब्लाक क्रमांक एक,दो,तीन और चार के द्वारा जिला अस्पताल में मरीजों फल वितरण किया गया। शहर अध्यक्ष विजय पांडेय ने कहा कि प्रदेश अध्यक्ष मोहन मरकाम के अध्यक्ष बनने से कांग्रेस पार्टी को मजबूती मिली है। लगातार धरना -प्रदर्शन कर केंद्र की मोदी सरकार के जनविरोधी योजनाओ को ,जनता के बीच संप्रेषित करने में सफल रहे है। वही छत्तीसगढ़ कांग्रेस में संगठनात्मक मजबूती के लिए बूथ, सेक्टर, ज़ोन कमेटियों का गठन ,लगातार सम्भाग शहर,ज़िला ,ब्लाक,ज़ोन स्तर बैठको का आयोजन हो रहे है ,छत्तीसगढ़ सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं को कार्यकर्ताओ के माध्यम से जनता तक पहुंचाने में सफल रहे। शहर अध्यक्ष विजय पांडेय ने कहा कि मोहन मरकाम ने इन तीन वर्षों में संगठन को मजबूत करने के साथ साथ ग्रास रुट में काम किये ,उनकी सहजता ,सरलता और मिलनसारिता के कारण आम

कार्यकर्ताओ में उत्साह का संचार हुआ है और कार्यकर्ता पूरी निष्ठा और लगन से कांग्रेस के प्रति समर्पण भाव से काम कर रहे है।

कार्यक्रम में शहर अध्यक्ष विजय पांडेय, योग आयोग सदस्य रविन्द्र सिंह, ज़फ़र अली, राकेश शर्मा,ऋषि पांडेय, ब्लाक अध्यक्षगण जावेद मेमन, अरविंद शुक्ला,विनोद साहू, मोती ठारवानी ,चन्द्रहास केशरवानी ,अर्जुन सिंह,सुभाष ठाकुर, काशी रात्रे, मनोज शर्मा, गजेंद्र श्रीवास्तव,सन्दीप बाजपेयी, सरिता शर्मा,किरण कश्यप, रामशरण साहू,शंकर कश्यप,सुदेश दुबे, रामचन्द्र क्षत्री, राजकुमार यादव,मोहन जायसवाल, हरमेंद्र शुक्ला, भरत जुर्यनी, नवल सोनी, काजू महाराज,आदि उपस्थित थे।

सिविल सर्जन डा. अनिल गुप्ता जी का विशेष सहयोग रहा ,जिन्होंने कांग्रेसजनों के साथ पूरे वार्डो में साथ चलकर फल वितरण करने में पूरी मदद की ।

कांग्रेसजनों ने लिया संकल्प

प्रदेश संगठन प्रमुख के तीन वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शहर कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारियों ने संगठन को चुस्त बनाने और प्रदेश कांग्रेस कमेटी से भेजे जाने वाले कार्यक्रम को गम्भीरता के साथ करने का संकल्प भी लिया।

डॉ. मनीष राय का प्रयास और शिक्षा अधिकारी ने प्राचार्यो को दिया आदेश

बिलासपुर । 27 जून को शिक्षा विभाग और जिला प्रशासन की अनदेखी की शिकायत, डॉ मनीष राय ने जिला शिक्षा अधिकारी बिलासपुर को अभिभावकों की समस्या से संबंधित पत्र सौंपा था बिलासपुर जिले में लगभग सभी प्राइवेट स्कूल और अनुदान प्राप्त स्कूलों द्वारा सिर्फ लवली ड्रेसेस और इंडियन ड्रेसेस का पता यूनिफॉर्म खरीदने के लिए दिया जाता रहा है यही हाल पुस्तक और कॉपियां बेचने वालों के साथ भी है माता पिता और अभिभावक अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ टोकन लेकर 3 से 4 घंटे गोल बाजार एवं तेलीपारा के दुकान के सामने इंतजार करते पाए जाते हैं इन्हीं सब बातों की शिकायत शिक्षाविद एवं समाजसेवी डॉ मनीष राय, राष्ट्रीय संगठन महामंत्री, दुर्घटनामुक्त भारत व संयोजक , माई होम बिलासपुर ने मुख्य

सचिव, छत्तीसगढ़ शासन ,स्कूल शिक्षा सचिव और जिला शिक्षा अधिकारी, बिलासपुर को सौंपी थी साथ ही कड़ी कार्यवाही करने हेतु निवेदन भी दिया था इसके परिणाम स्वरूप 28 जून को जिला शिक्षा अधिकारी, बिलासपुर ने सभी प्राचार्यो को नोटिस के साथ आदेश देते हुए निर्देशित किया है कि सभी अभिभावकों और माता पिता को स्कूल ड्रेस के साथ पुस्तक कॉपी खरीदने का अधिकार स्वतंत्र है जिसकी जहां मर्जी होगी, वह से वहाँ से खरीद सकता है अब भविष्य में अगर किसी स्कूल के माध्यम से विशेष दुकान का नाम बोला जाता है ,तो नियमानुसार कड़ी से कड़ी अनुशासनात्मक कार्यवाही, उस संस्था के खिलाफ की जावेगी इस खबर के बाद सभी अभिभावकों एवं माता पिता ने श्री मनीष राय का बहुत-बहुत धन्यवाद और आशीर्वाद दिया है कि उन्होंने समाज में बढ़ रहे भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कदम उठाया है जिसके फलस्वरूप प्रशासन को कार्यवाही करने के लिए बाध्य होना पड़ा श्री मनीष राय ने अपने सभी मीडिया बंधुओं को इस खबर के लिए कोटि-कोटि धन्यवाद और आभार व्यक्त किया है श्री राय ने जिला शिक्षाधिकारी और स्कूल शिक्षा सचिव और मुख्य सचिव को भी धन्यवाद ज्ञापित किया है।

टक्कर मार बाइक सवार को घसीट ले गई बस

सड़क किनारे से जा रहा था; गंभीर हालत में अधेड़ बिलासपुर रेफर

जांजगीर-चांपा छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा में बुधवार को तेज रफ्तार बस ने सड़क किनारे जा रहे बाइक सवार को सामने से टक्कर मार दी। टक्कर लगने के बाद चालक बाइक सहित बस के नीचे फंस गया और घिसटता चला गया।

सूचना पर पहुंची पुलिस ने अधेड़ को जिला अस्पताल में भर्ती कराया, जहां से उसकी हालत गंभीर देख बिलासपुर रेफर कर दिया गया है। हादसे के बाद चालक बस छोड़कर भाग निकला। हादसा बम्हनीडीह थाना क्षेत्र में हुआ है।

जानकारी के मुताबिक, बाराद्वार क्षेत्र के रिस्दा निवासी ईश्वरी यादव (55) बुधवार को बाइक पर गोंविदा से अपने गांव लौट रहे थे। अभी वे सोनाईडीह गांव के पास पहुंचे थे कि चांपा की ओर से आ रही तेज रफ्तार बस ने सामने से टक्कर मार दी। टक्कर लगने से ईश्वरी यादव बाइक सहित बस के नीचे घुस गए और गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसा होते देख आसपास के लोग एकत्र हो गए तो चालक बस छोड़कर भाग निकला।

सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने घायल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बम्हनीडीह ले गए। वहां से उसे जिला अस्पताल भेज दिया गया, लेकिन लगातार हालत बिगड़ती देख ईश्वरी यादव को बिलासपुर रेफर कर दिया गया है। हादसे के समय बस यात्रियों से खचाखच भरी हुई थी। यह बस राजधानी ट्रेवल्स की बताई जा रही है। जो कि कोरबा जमनी पाली से सरसीवा सराईपाली की ओर जा रही थी।

जमीन विवाद पर बिलासपुर में भैया और भाभी की हत्या कर थाने पहुंचा युवक, दो नाबालिग सहित चार हिरासत में

बिलासपुर। मंगलवार की शाम मिनी बस्ती जतिया तालाब के पास रहने वाले आटो चालक ने जमीन विवाद में अपने बड़े भाई और भाभी की हत्या कर दी। इसके बाद वह मारपीट की शिकायत लेकर थाने पहुंच गया।

इस बीच पुलिस को हत्या की जानकारी मिल गई। पुलिस ने आरोपित को हिरासत में ले लिया। वहीं, मौके पर पहुंचकर घायलों को अस्पताल पहुंचाया। पुलिस ने महिला और उसके पति के शव को कब्जे में लेकर चीरघर भेज दिया है। मामले में दो नाबालिग समेत चार लोगों को हिरासत में ले लिया गया है। उसने घटना के संबंध में पूछताछ की जा रही है।

जरहाभाठा मिनी बस्ती जतिया तालाब के पास रहने वाले ओमप्रकाश गढ़ेवाल(40) आटो चलाते हैं। उनकी सात एकड़ पैतृक जमीन सकरी क्षेत्र के सैदा और पांड़ गांव में है। जमीन के बंटवारे को लेकर भाइयों के बीच विवाद चल रहा था। मंगलवार की सुबह ओमप्रकाश के बड़े भाई दीपक गढ़ेवाल(42) कुछ लोगों को लेकर सैदा गया था। वहां पर वह जमीन को दिखाकर सौदा करने की फिराक में था। इसकी जानकारी होने पर ओमप्रकाश भी मौके पर पहुंच गया। वहां दोनों के बीच विवाद हो गया। इस दौरान हुई मारपीट के बाद दीपक और ओमप्रकाश सकरी थाने आए।

ओमप्रकाश बिना शिकायत किए ही घर लौट गया। शाम पांच बजे दीपक ने घर आकर ओमप्रकाश के आटो में तोड़फोड़ शुरू कर दी। इसका विरोध करने पर उसने ओमप्रकाश पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। मारपीट के दौरान ओमप्रकाश ने दीपक पर राड से हमला कर दिया। इससे वह मौके पर ही गिर गया। इसके बाद उसने कुल्हाड़ी छीनकर दीपक पर ताबड़तोड़ हमला कर दिया। इस दौरान दीपक की पत्नी पुष्पा और बेटियां हर्षिता व रोशनी बीच-बचाव के लिए आईं। ओमप्रकाश ने पुष्पा पर भी कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। हमले में हर्षिता और रोशनी भी घायल हो गई। इससे दीपक और पुष्पा की मौके पर ही मौत हो गई।

इधर हमले के बाद ओमप्रकाश मारपीट की शिकायत लेकर थाने पहुंच गया। मोहल्ले वालों ने घटना की जानकारी सिविल लाइन पुलिस को दी। इस पर पुलिस ने थाने में ही ओमप्रकाश को हिरासत में ले लिया। इसके बाद पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव चीरघर भेज दिया। वहीं, घायलों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मामले में पुलिस ने ओमप्रकाश और उसकी पत्नी संगीता गढ़ेवाल व दो नाबालिग बेटियों को हिरासत में लिया है। उनसे घटना के संबंध में पूछताछ की जा रही है।

बिलासपुर की प्रतिष्ठित समाजसेवी संस्था शांता फाउंडेशन

जरूरतमंद लोगों को मानसून से बचाव हेतु छातों का किया गया वितरण

बिलासपुर । न्यायधानी की समाज सेवी संस्था शांता फाउन्डेशन ने हमेशा की तरह एक बार फिर जरूरतमंदों को मानसून से बचने के लिए छाती का वितरण किया गया है। शाम फाउंडेशन के सचिव सुश्री नेहा तिवारी ने बताया कि बिलासपुर से लगभग 30 किलोमीटर दूर मां महामाया प्रांगण रतनपुर में जरूरतमन्द लोगों को बरसात में भीगते हुए अपने जीवन यापन करने में परेशानी होती है इन सभी बातों को देखते हुए न्यायधानी बिलासपुर की प्रतिष्ठित हमारी समाजसेवी संस्था शांता फाउंडेशन के द्वारा छाता प्रदान किया गया। छाता मिलने से सभी जरूरतमंद के चेहरे खिल उठे। जरूरतमंद को छाता वितरण करते समय हमारी संस्था के सभी सदस्य भावुक हो

गए। समाजसेवी संस्था शांता फाउंडेशन के कोषाध्यक्ष सुश्री रुपाली पाण्डेय ने कहा कि बरसात में जरूरतमंदों की सुध लेने हमारी संस्था विभिन्न जगहों का निरीक्षण करने पहुंचे तो हमने पाया कि अभी बारिश में बचाव के लिए छतरी अति आवश्यक है ऐसे में शांता फाउंडेशन ने बारिश के मौसम में छतरी प्रदान कर अपन कर्तव्य निर्वहन किया है। कार्यक्रम के अंत मे शांता फाउंडेशन के संस्थापक समाजसेवी नीरज गेमनानी ने कहा कि शांता फाउंडेशन बिलासपुर मौसम के हिसाब से सामाजिक कार्य हमेशा से संपादित करते आ रहे हैं ऐसे कार्य के लिए मैं समाज के युवाओं से यही अपील करना चाहूंगा कि वह अपने से या कोई भी सामाजिक संस्था से जुड़कर ऐसे नेक कार्य करने के लिए अपना योगदान जरूर दें।

अवैध तरीके से की जा रही थी गोवंश की तस्करी, बतौली पुलिस ने पकड़ा

जोहार छत्तीसगढ़-सीतपुर।

विधानसभा सीतापुर क्षेत्र से गौवंश की अवैध तस्करी का मामला, बढ़ता ही जा रहा है। गौवंश के अवैध तस्करी क्षेत्र में काफी ज्यादा सक्रिय है। जो यहां के गौवंश को अवैध तरीके से उठाकर यूपी और झारखंड भेज रहे हैं, कभी पैदल तो कभी गाड़ियों से इनकी तस्करी की जाती है।

जोहार छत्तीसगढ़ विशेष खबर

ताजा मामला 28 जून 2022 का हैए जब बतौली थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम बिलासपुर के बरगीडीह चौक पर प्रात: 3 बजे तस्करों द्वारा गौवंश को पैदल जशपुर की ओर ले जाया जा रहा है इसकी सूचना क्षेत्र के लोगों एवं बजरंग दल वालों को मिली, तत्काल पहुंचकर इसके बारे में पूरी जानकारी लेनी चाहिए तब पांच आरोपियों में से तीन वहां से फरार हो गए, और 2 आरोपियों को पकड़ लिया गया। सूचना पर बतौली पुलिस जैसे ही वहां पर पहुंचकर जानकारी ली, आरोपियों द्वारा कोई भी वैध दस्तावेज पुलिस को उपलब्ध नहीं कराया गया।

तब बतौली पुलिस ने तत्काल आरोपियों को हिरासत में लेकर मवेशियों को जप्त कर लिया। बतौली पुलिस ने आरोपियों के ऊपर भारतीय दंड विधान की धारा 4,6,10 कृषि पशु अधिनियम की कार्यवाही करते हुए, आरोपियों को जेल भेज दिया है। पकड़े गए आरोपियों में सुमेर पिता गोगो विश्वकर्मा निवासी, टटकेला, और प्रेमसाय पिता पिंगु उराव ग्राम मोहनपुर है। साथ ही जप्त किए गए 11 नग गौवंश को सीतापुर के गौशाला में पहुंचा दिया गया है। फरार आरोपियों के बारे में जानकारी लेने पर एसडीओपी ने कहा कि जल्द ही उन लोगों को गिरफ्तार किया जाएगा। साथ ही लखनपुर क्षेत्र से जिसने इन लोगों को मवेशी उपलब्ध कराया था उसको पकड़ने के लिए पुलिस टीम भेज दिया गया है।

एक नजर

कृषि मंडियों में भार साधक समितियों की नियुक्ति के आदेश जारी

अब तक भार साधक अधिकारियों के माध्यम से हो रहा था कामकाज का संचालन

जोहार छत्तीसगढ़-रायगढ़।

छत्तीसगढ़ की सभी 69 कृषि उपज मंडी समितियों में भार साधक अधिकारियों के स्थान पर भार साधक समितियों की नियुक्तियां कर दी गई हैं। प्रत्येक समिति में एक अध्यक्ष, एक उपाध्यक्ष तथा 5 सदस्यों समेत कुल 07 सदस्यों की नियुक्ति की गई है। संचालक, कृषि विपणन, रायपुर द्वारा इन भार साधक समितियों की नियुक्ति के आदेश जारी कर दिए गए हैं। भार साधक अधिकारियों के माध्यम से संचालित हो रहे कार्यों का संचालन अब समितियों के माध्यम से होगा।

जिले में इन भारसाधक समितियों का हुआ गठन

रायगढ़ में नियुक्त भारसाधक समिति में हेमलाल यादव को अध्यक्ष एवं हेमसागर नायक को उपाध्यक्ष बनाया गया है। इसी तरह समिति में श्री मट्टूलाल चौहान, श्री देवकुमार चौधरी, धनवंत सिंह ठाकुर, रामकुमार पटेल तथा प्रदीप गर्ग को सदस्य नियुक्त किया गया है। इसी तरह खरसिया में भोग सिंह राठिया को अध्यक्ष, श्री गौरीशंकर गुप्ता को उपाध्यक्ष एवं श्री सादराम साहू, मैत्री कनेर, लीलावती राठिया, गोपाल दास महंत तथा जनक जायसवाल (व्यापारी प्रति.)को सदस्य नियुक्त किया गया है। सारंगढ़ में श्री मनमोहन पटेल को अध्यक्ष, दारासिंह जांगड़े को उपाध्यक्ष एवं कन्हैया वर्मा, धजाराम पटेल, चंद्रशेखर रात्रे, गिरजा पटेल तथा अशोक अग्रवाल (व्यापारी प्रति.)को सदस्य नियुक्त किया गया है। बरमकेला में श्री गंगा चौधरी को अध्यक्ष, रामगोपाल पटेल को उपाध्यक्ष एवं संतोष अग्रवाल, रमेश निषाद, धमेन्द्र चौहान,गणपती पाढ़ी तथा कृष्णचंद प्रधान को सदस्य नियुक्त किया गया है। इसी तरह घरघोड़ा में नियुक्त भारसाधक समिति में सनत राम राठिया को अध्यक्ष, विजय कुमार शर्मा को उपाध्यक्ष एवं संजय अग्रवाल (व्यापारी प्रति.)श्री किशन अग्रवाल,परमेश्वर राठिया, कौशिल्या तथा विद्याधर डडसेना को सदस्य नियुक्त किया गया है।

वन विभाग ने मृतक के परिजनों को दिया 25 हजार की मुआवजा राशि

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुरनगर।

वनमण्डाधिकारी ने बताया कि बगीचा विकासखंड में हाथी के द्वारा करमू राम पिता बौद्ध को कुचल दिया गया। जिसके उपरांत सूचना प्राप्त होते ही वनपरिक्षेत्राधिकारी द्वारा वन अमला के साथ मौके पर पहुंचकर करमू राम को समीप के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र शांतिपारा बतौली में उपचार कराया गया। उन्होंने बताया कि उपचार के दौरान ही करमू की मौत हो गई। मृतक करमू राम के परिजनों को तत्काल 25 हजार रुपए की सहायता राशि उपलब्ध कराई गई है। उन्होंने कहा कि मृतक के पीएम रिपोर्ट प्राप्त होने के उपरांत शेष मुआवजा राशि के भुगतान की कार्यवाही की जाएगी।

सरकार तुंहर द्वार, 83 हजार से अधिक लोग लाभान्वित

चार मेगा हेल्थ शिविरों से 10 हजार से अधिक लोगों का इलाज

कोरबा । कलेक्टर रानू साहू के मार्गदर्शन एवं कुशल नेतृत्व में कोरबा जिले में स्वास्थ्य, शिक्षा एवं जनहित के विभिन्न कार्यो का क्रियान्वयन हुआ है। एक ओर पिछले एक वर्ष के दौरान जिले में आम नागरिकों की सहुलियतो और सुविधाओं में वृद्धि हुई है। वही दूसरी ओर जिला प्रशासन की विशेष पहल से जनता को राशन, पेंशन, आय, जाति प्रमाण पत्र भी सरलता से प्राप्त हुई हैं। कलेक्टर साहू की स्वास्थ्य, शिक्षा एवं नागरिकों के हित में काम करने की मंशा के फ्लस्वरूप जिले में सरकार तुंहर द्वार कार्यक्रम, वृहद स्वास्थ्य शिविर, नि:शुल्क बीपी, शुगर जांच शिविर, नये स्वामी आत्मानंद स्कूलों की स्वीकृति, सी-मार्ट एवं रूरल इंडस्ट्रियल पार्क की स्थापना से जिले वासियों को निश्चित रूप से लाभ हुई है। कलेक्टर साहू की विशेष पहल सरकार तुंहर द्वार कार्यक्रम के तहत् अब तक जिले में 12 शिविरों का आयोजन किया जा चुका है। इनमें से आठ ग्रामीण क्षेत्रों और चार नगर निगम कोरबा क्षेत्र में आयोजित किए गये है। कलेक्टर की विशेष पहल से आम शिविरों की तुलना में सरकार तुंहर द्वार शिविर में अधिकारी-कर्मचारी नागरिकों के घर जाकर शिविर के 15 दिन पहले घर-घर सर्वे करके उनकी समस्याओं से संबंधित आवेदन प्राप्त किए।

देश की सुरक्षा से जुड़ी अग्निपथ योजना पर राजनीति करने से बाज आए कांग्रेस-बाफना

दुर्ग । प्रदेश भाजपा व्यापारी प्रकोष्ठ के संयोजक व पूर्व संसदीय सचिव लाभचंद बाफना ने सेना में 4 साल के भर्ती के लिए केन्द्र सरकार द्वारा बनाए गए अग्निपथ योजना के खिलाफ कांग्रेसी विरोध को अशोभनीय बताया है। उन्होने कहा है कि देश की सुरक्षा से जुड़ी योजना पर हल्की व सस्ती राजनीति करने से कांग्रेस बाज आए। यह अग्निपथ योजना देश के तीनों सेनाओं द्वारा पूरा विचार-विमर्श कर बनाया गया है। जिसका अग्निवीरों को लाभ मिलेगा। कांग्रेस का इतिहास रहा है, जो भी देश की सुरक्षा व लोकतंत्र के पक्ष में रहा है, उसके खिलाफ विरोध करना। अग्निपथ योजना का प्रायोजित विरोध, तोडफोड़ , ट्रेनों व भाजपा कार्यालयों में आगजनी कांग्रेस की उसी देश विरोधी मंशा को प्रगट करती है। यह बातें श्री बाफना ने बुधवार को जिला भाजपा कार्यालय में मीडिया से चर्चा में कही। इस दौरान उनके साथ जिला भाजपा अध्यक्ष जितेन्द्र वर्मा, पूर्व महापौर चंद्रिका चंद्राकर, जिला भाजपा महामंत्री ललित चंद्राकर, उपाध्यक्ष संतोष सोनी, मंत्री मनोज मिश्रा, अजय तिवारी, गजेन्द्र यादव भी मौजूद थे।चर्चा में प्रदेश भाजपा व्यापारी प्रकोष्ठ संयोजक लाभचंद बाफ्ना ने बताया कि अग्निपथ योजना के तहत 46 हजार अग्निवीरों की भर्ती की जा रही है।जिनमें से 25 प्रतिशत अग्निवीरों की स्थाई भर्ती की जाएगी।

कलेक्टर ने सन्ना में आकाशीय बिजली से प्रभावित 3 परिजनों को मुआवजा राशि देने के निर्देश

घायलों का स्वास्थ्य केन्द्र में किया जा रहा ईलाज

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुरनगर।

कलेक्टर रितेश कुमार अग्रवाल ने आज सन्ना बाजार डांड में आकाशीय बिजली से प्रभावित 3 मृतकों के परिजनों को आरबीसी 6ध4 के तहत् मुआवजा देने के लिए प्रकरण बनाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने बगीचा एसडीएम और सन्ना तहसील को निर्देशित किया है कि घायल मरीजों का इलाज प्राथमिकता से करवाए। घायल मरीजों को

ईलाज के लिए रायपुर या अम्बिकापुर भी ले जाने की आवश्यकता पड़ेगी तो मुख्यचिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी को निर्देश देते हुए घायल मरीजों को भेजवाने की व्यवस्था करने कहा है। इसकी भी सुविधा स्वास्थ्य अमला को करने के सख्त निर्देश दिए हैं। मृतकों में बगीचा विकासखंड के मधुपूर कवई निवासी संजू राम, ग्राम बम्हनी निवासी भिखनाथ एवं जशपुर विकासखंड के ग्राम रानी बगीचा निवासी विजय मिंज शामिल है। साथ ही सन्ना तहसील के ग्राम जमुनियापाठ निवासी निलेश्वर यादव तथा ग्राम छिनगाटोली निवासी सैनाथ राम घायल है। जिनका इलाक कराने के निर्देश दिए गए है।

सन्ना साप्ताहिक बाजार के दौरान 3 लोगों की आकाशीय बिजली गिरने से हुई मौत

खबर मिलते ही परिजनों से मुलाकात करने तत्काल पहुंचे विधायक विनय भगत

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुरनगर।

जशपुर जिले के सन्ना में साप्ताहिक बाजार में बज्रपात की चपेट में तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई।

विधायक विनय भगत ने खबर मिलते हुए तत्काल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सन्ना पहुंचकर मृतकों को देखा एवं परिजनों से मुलाकात कर ढांढस बंधाया। इस अवसर पर जशपुर

- प्रभावित परिजनों को तत्काल मुआवजा राशि देने हेतु निर्देशित किया
- पाठ क्षेत्रों में तड़ीत चालक लगाए जाने के दिए निर्देश

विधायक ने तत्काल परिजनों को आरबीसी 6.4 के तहत सहायता राशि 4-4 लाख रुपये देने के लिए निर्देशित किया। साथ ही शव वाहन की भी व्यवस्था करने के निर्देश दिए। जशपुर विधायक विनय भगत ने लगातार हो रहे ऐसी घटनाओं को देखते हुए तड़ित चालक लगाने की बात कही। उन्होंने कहा पाठ व सन्ना क्षेत्र में जिन स्थानों पर मार्केट लगाया जाता है। वहां पहले तड़ित चालक लगाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विशेषकर पाठ क्षेत्रों के हर एक ग्राम पंचायत में तड़ित चालक की मांग मुख्यमंत्री से किया है जिसकी सहमति उन्होंने दी है।

प्राथमिक शाला सरधापाठ के छत की मरम्मत कार्य किया पूर्ण

वर्तमान में शाला भवन में कक्षाओं का हो रहा संचालन

तूफ ान के कारण शाला की एस्बेस्टस शीट क्षतिग्रस्त हो गया

बच्चे शाला आकर प्राप्त कर रहे शिक्षा

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुरनगर।

कलेक्टर रितेश कुमार अग्रवाल के निर्देशन में बगीचा विकासखण्ड के शासकीय प्राथमिक शाला सरधापाठ के छत का मरम्मत कार्य पूर्ण किया गया है। उल्लेखनीय है कि प्राथमिक शाला सरधापाठ में एक शिक्षक एवं अध्ययरत बच्चों की संख्या 40 है। 21 जून 2022 को रात्रि समय तेज आंधी

था। कलेक्टर ने शाला की छत की यथाशीघ्र मरम्मत कराने के निर्देश दिए थे। 24 जून को शाला की छत में नया एस्बेस्टस शीट लगवाकर छत की मरम्मत कार्य पूर्ण कराया गया है। वर्तमान में शाला भवन में कक्षाओं का संचालन हो रहा है। जहाँ बच्चे शाला आकर शिक्षण प्राप्त कर रहे है।

काम बंद कलम बंद एक दिवसीय संकेतिक हड़ताल

छत्तीसगढ़ अधिकारी कर्मचारी फेडरेशन ने मुख्यमंत्री के नाम एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

जोहार छत्तीसगढ़-पत्थलगांव।

काम बंद कलम बंद एक दिवसीय संकेतिक हड़ताल छत्तीसगढ़ अधिकारी कर्मचारी फेडरेशन पत्थलगांव द्वारा मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नाम एसडीएम को सौंपा ज्ञापन केंद्रीय कर्मचारियों के समान 34 प्रतिशत मंहगाई भत्ता और सातवें वेतनमान के अनुरूप गृह भाड़ा भत्ता सहित मांगों को लेकर छत्तीसगढ़ के कर्मचारी एक बार फिर लामबंद हो गए है।

छत्तीसगढ़ के कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन ने एक दिवसीय हड़ताल का ऐलान किया है। कर्मचारियों की हड़ताल की वजह से आज प्रदेश के सभी सरकारी दफ्तर बंद रहें। सभी कर्मचारी अधिकारी छत्तीसगढ़ राज्य के कर्मचारियों को केंद्रीय

कर्मचारियों की तुलना में 12 प्रतिशत कम मंहगाई भत्ता दिया जा रहा है। जबकि अन्य पड़ोसी राज्यों में राज्य कर्मचारियों को केंद्र के समान मंहगाई भत्ता प्रदान किया जा रहा है। दिन ब दिन बढ़ती महंगाई और कम महंगाई भत्ते ने राज्य कर्मचारियों को आंदोलन के लिए विवश कर दिया है।सर्व शिक्षक संघ भी हुआ शामिल राज्य शासन कर्मचारियों के वेतन भुगतान में कटौती कर रही है जो कि मौलिक अधिकार का हनन है एक दिवसीय धरना में संयोजक अधिकारी कर्मचारी फेडरेशन पत्थलगांव भीमसेन स्वर्ण कार अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी केके पटेल, प्रांतीय सदस्य ओपी यादव, विकासखंड सचिव एन एस ठाकुर, एलआर यादव, गिरीश सिंह, अरूण रवानी,कुलदीप गुप्ता, पटवारी संघ जिला उपाध्यक्ष हेमराज यादव, ई लकड़ा, नेताम,रामकृष्ण साहू, कृष्ण कुमार सिंह, चिंताराम लहरे, नीलिमा, उदय राठिया, डी केरकेट्टा, वाहन चालक संघ अध्यक्ष लंबोदर यादव, अशोक मांझी, भगत सिंह भगत, मुकेश नगेसिया, अरुण लकड़ा, दिलीप लकड़ा,अनिता लहरे, पुष्प लता सिंह एवं अन्य उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री के सारंगढ़ आगमन पर ग्राम टाड़ीपार कोटवारी जमीन के अतिक्रमणकारियों के ऊपर होगी शिकायत

जोहार छत्तीसगढ़-सारंगढ़।

सारंगढ़ मे कोटवारी जमीन का मामला गर्माता जा रहा है। जहां टाडीपार में कोटवार की जमीन को अतिक्रमण कर उपसरपंच मनहरण जायसवाल द्वारा मकान बनाया जा रहा है।

सूत्र बता रहे कोटवारी जमीन को कई लोगों ने अतिक्रमण किया हुआ और प्लाट काट कर घर बनाया गया है। बहुत जल्द और भी नाम उजागर होने ही वाला है जिसमे कोटवारी जमीन को मिलकर बेच रहे हैं। जिसमे मुख्य भूमिका उपसरपंच मन्हरण जायसवाल योगेश का है जहां लगभग दो लाख रुपए में अपना घर बनाने के लिए कोटवार से मौखिक तौर पर जमीन खरीद लिए जिसकी खबर प्रकाशित होने के बाद तेज तर्रार युवा तहसीलदार ने फौरन संज्ञान लेते हुए जांच करने को कहा गया है। जैसे ही जांच पड़ताल होना शुरू हुआ वैसे ही उपसरपंच मनहरण जायसवाल ने अपने मिलीभगत के साथ मिलकर अधिकारी की आंखों में धूल झोंकने के लिए चाल चलना शुरू कर दिया सूत्र बताते है कि कोटवार और उपसरपंच मिलकर अपनी गलती छुपाने के लिए उपसरपंच कोटवार को कहने के लिए कह रह है। कि इस घर को मैं ही बनवा रहा हूं जांच में आए कोई अधिकारी तो ऐसा ही कहना ताकि हम दोनों बच जाए। भला कोटवार बेचारा क्या ना करता कोटवार भला अपने पैर पे कैसे कुल्हाड़ी मारे,कोटवार को नहीं है बेचने का अधिकार लेकिन चोरी छुपे बेच बैठे जिसे अब कोटवार अपनी ऊपर गिरती गाज को बचाने के लिए उपसरपंच की मिलीभगत में अपना भागीदारी निभा रहे हैं। अतिक्रमणकारियों द्वारा कोटवार को गुमराह कर आवाज को दबाने की कोशिश किया जा रहा है। मुख्यमंत्री की आने पर कोटवारी जमीन पर अतिक्रमण करने वाले के ऊपर शिकायत होगी।

लापरवाह शिक्षकों पर कार्यवाही जारी

जोसेफ खाखा पर गिरी निलंबन की गाज

जोहार छत्तीसगढ़-धरमजयगढ़।

विकासखण्ड धरमजयगढ़ के प्राथमिक एवं माध्यमिक शाला बरघाट के शिक्षकों के अनियमितता उपस्थिति व लापरवाही के प्राप्त शिकायत पर विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी धरमजयगढ़ एसआर सिदार द्वारा जांच टीम गठित कर शाला का जांच कराया गया।

जांच प्रतिवेदन के आधार पर जिला शिक्षा अधिकारी रायगढ़ को अनुशासनात्मक कार्यवाही हेतु प्रस्ताव प्रेषित किया गया। जिला शिक्षा अधिकारी आरपी आदित्य द्वारा प्राथमिक शाला में पदस्थ शिक्षक देवहरा सिंह ठाकुर सहायक शिक्षक एलबी, सरला कुजुर सहायक शिक्षक एलबी एवं माध्यमिक शाला बरघाट में पदस्थ मानवेएल खलखो शिक्षक एलबी का एक-एक वेतन वृद्धि रोका गया है। तथा जोसेफ खाखा शिक्षक एलबी को निलंबित किया गया है। जिला शिक्षा अधिकारी रायगढ़ के मार्गदर्शन में बीईओ द्वारा सत्र 2022-23 के प्रारंभ से ही टीम बनाकर स्कूलों का सघन निरीक्षण किया जा रहा है। एसडीएम धरमजयगढ़ मनीष मिश्रा द्वारा लापरवाह एवं अनुपस्थित शिक्षकों का एक-एक दिन का वेतन काटने का निर्देश दिया गया है। लापरवाह एवं अनुपस्थित शिक्षकों को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। जवाब संतोषप्रद न होने की स्थिति में अनुशासत्मक कार्यवाही हेतु जिला शिक्षाअधिकारी कार्यालय रायगढ़ को प्रस्ताव प्रेषित किया जा रहा है।

केंद्र के योजनाओं में फीता काटकर वाहवाही न लुटे विधायक - बब्बल पाण्डेय

जोहार छत्तीसगढ़-धरमजयगढ़।

भारतीय जनता पार्टी मण्डल धरमजयगढ़ के प्रभारी जिला उपाध्यक्ष चंद्र प्रकाश पांडेय उर्फ बब्बल पाण्डेय ने धरमजयगढ़ विधायक पर जमकर निशाना साधा है। पांडेय 29 जून को मंडल भाजपा धरमजयगढ़ की बैठक में शामिल होने आए थे। बैठक में सर्वप्रथम मां भारती की प्रतिमा पर द्वीप प्रज्वलित किया गया। मण्डल प्रभारी चंद्रप्रकाश पांडेय संगठन ने मण्डल स्तर पर होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। जिसमें वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, संगोष्ठी, क्षेत्रीय मुद्दे को लेकर आंदोलन करने के बारे में बताते हुए कहा कि धरमजयगढ़ के विधायक को क्षेत्र के विकास से कोई लेना देना नहीं है। बल्कि केंद्र में बैठी भाजपा सरकार के योजनाओं का फीता काटकर विधायक वाहवाही लूटना चाह रहे हैं। लेकिन क्षेत्र की जनता सब जान चुकी है। राज्य के कांग्रेस के रीति नीति से हर वर्ग लोग परेशान हैं। खेती के सीजन में किसानों को सोसाइटी से खाद नहीं मिल रहा है। विधायक वहां जाकर समस्या का समाधान क्यों नहीं करते हैं। क्षेत्र की जनता विधायकों को विधानसभा में आवाज उठाकर समस्या का समाधान करने के चुनती है। लेकिन धरमजयगढ़ के विधायक किसी मुद्दे को लेकर विधानसभा में आवाज नहीं उठाते। जिससे क्षेत्र का विकास ठप्प पड़ गया है। प्रदेश सरकार का साढ़े तीन साल का कार्यकाल पूरा हो चुका है। लेकिन उनके पास दिखाने के लिए कुछ नहीं है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता जनता के साथ खड़ी है। जो इन सभी मुद्दों को लेकर सड़क पर लड़ाई लड़ने को तैयार है। उसके पश्चात मंडल अध्यक्ष गोकुल नारायण यादव ने सभा को संबोधित किया और संगठन को मजबूत करने की बात कही एवं मंडल में हुए पिछले कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी दी। नगर पंचायत पूर्व अध्यक्ष महेश चैनानी ने बैठक को संबोधित करते हुए आजिवन सहयोग निधी के बारे में जानकारी दी। चैनानी को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस के अवसर पर होने वाले विभिन्न कार्यक्रम का प्रभारी बनाया गया जो 30 जून से 07 जूलाई तक आयोजित किया जाएगा। बैठक का संचालन महामंत्री अनिल पांडेय द्वारा किया गया। वहीं आभार प्रदर्शन पुरुषोत्तम राठिया ने किया। बैठक में शशीपटेल,भोगेश्वर बेहरा,नरेश राठिया, सतीश भारती, शिवहरि जिंदल, सुभाष चन्द्र मंडल,जनक डनसेना, धर्मवीर शर्मा,यदू मंडल,असीम शील सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कलम बंद आंदोलन कर कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन ने मुख्यमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

शासकीय कार्यालयों में कामकाज रहा ठप्प

जोहार छत्तीसगढ़-धरमजयगढ़।

महीनों पहले कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन ने मांग पूरी नहीं होने पर चरणबद्ध तरीके से आंदोलन करने राज्य शासन को चेतावनी दी गई थी। छत्तीसगढ़ कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन द्वारा 29 जून को पूरे प्रदेश में एक दिवसीय कलम बंद आंदोलन करने का निर्णय लिया गया था।

जिस पर धरमजयगढ़ के कर्मचारी अधिकारी एक दिन का अवकाश लेकर 11 बजे मंगल भवन में एकत्रित हुए। जहां फेडरेशन के पदाधिकारियों ने आंदोलन को संबोधित करते हुए राज्य सरकार से केंद्र द्वारा देय तिथि से समान महंगाई भत्ता एवं सातवें वेतनमान के अनुरूप गृह भाड़ा भत्ता की दो सूत्रीय मांगों को लेकर कहा कि राज्य सरकार कर्मचारियों के वेतन भुगतान में कटौती कर रही है जो कि मौलिक अधिकार का हनन है। सरकार जल्द ही मांगों को पूरा नहीं करती है तो आगामी दिनों में फेडरेशन अनिश्चितकालीन हड़ताल करने बाध्य होगा। मंगल भवन से रैली निकालकर नारेबाजी करते हुए एसडीएम कार्यालय पहुंचे जहां तहसीलदार को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपे। फेडरेशन द्वारा कहा गया है कि 4 सितम्बर 2021 को मुख्यमंत्री से भेंट कर मांग से अवगत कराया गया। जिसपर मुख्यमंत्री द्वारा बाद में निर्णय लेने का आश्वासन दिया गया था। लेकिन राज्य सरकार ने अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया है। कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन से संबद्ध सभी कर्मचारी संगठनों द्वारा अवकाश लेकर कलम बंद आंदोलन में शामिल होने से शासकीय कार्यालयों में दिन भर कामकाज ठप पड़ गया।

मोटरसाइकिल के ठोकर से दो वर्षीय अनाथ बच्ची का पैर टूटा

जोहार छत्तीसगढ़-धरमजयगढ़।

मोटरसाइकिल के ठोकर से दुधमुंही बच्ची का पैर टूट गया। घटना कापू थाना अंतर्गत ग्राम बताती की है। जहां मोटरसाइकिल चालक ने लापरवाही पूर्वक चलाते हुए बच्ची को ठोकर मार दिया। जिससे मासूम बच्ची की बांया पैर टूट गया। ग्राम बताती निवासी खुशबू बैगा पिता स्वर्गीय सोहन बैगा उम्र 3 वर्ष शाम को घर से बाहर खेल रही थी। तभी लापरवाही पूर्वक गाड़ी चलाते हुए बच्ची को ठोकर मार दी। जिसके बाद बच्ची को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र चाल्हा में भर्ती कराया गया। जहां से स्थिति को देखते हुए 108 की मदद से सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां बच्ची का उपचार किया जा रहा है। बता दें कि बच्ची के माता-पिता दोनों नहीं हैं। एक बड़ा भाई 11 वर्ष का है। बच्ची का देखभाल उसके परिजन करते हैं।

ग्राम हिच्छा पंचायत में फर्जी जीएसटी बिल का खेल जोरों पर

जोहार छत्तीसगढ़-सारंगढ़।

सारंगढ़ में अब तो जीएसटी के नाम पर भी लूट मचाना शुरू कर दिए। सारंगढ़ मे ऐसे कई पंचायत है जहा बिल के नाम पर हो रही लाखों करोड़ों की लूट और सरपंच को पता ही नहीं की जिस बिल को वो लगा रहे हैं वो बिल नियम के विरुद्ध है कम कमीशन की चक्कर में फ र्जी बिल लगा रहे हैं।

सरपंच सचिव और कम कमीशन को आड़ में अपना फर्जी बिल का कारोबार चलाने वाले कई जीएसटी धारक ग्रामीण अंचल में सक्रिय हो गए हैं। ऐसे ही एक पंचायत जहा लाखों रुपए का बिल सरपंच सचिव और जीएसटी वेंडर की मिलीभगत से चल रहा है।

ट्रेडर्स प्रोपाइटर नरेंद्र पटेल पंचायतों को बोर खनन एवं पम्प स्थापना का दे रहा बिल

सारंगढ़ जनपद पंचायत अंतर्गत आने वाले ग्राम पंचायत हिच्छा के कारनामे ही अलग है पंचायत मे सरपंच सचिव ने शासन से मिली हुई वित्त की राशि का कर रहे हैं। अंधाधुन दुरुपयोग ना तो गाइडलाइंस देख रहे हैं। और ना ही गाइडलाइन के अनुसार काम करवा रहे हैं। बिल के नाम पर लूट खसोट का काम कर रही है सूत्रों से मिली जानकारी अनुसार पटेल व्यापारी ट्रेडर्स का जीएसटी लिया गया है जिसमे वह एक सप्लायर का काम करता है। जिसमे वह छड़,सीमेंट रेती,गिट्टी ट्रेडर्स जैसे मटेरियल की खरीदी कर उसे दूसरे पक्ष को बेचने का जीएसटी लिया है। लेकिन यह तो साहब पटेल व्यापारी ने ट्रेडर्स की जगह अब बोर खनन का बिल लगाना शुरू कर दिया क्या यह नियम में है या नियम के विरुद्ध है। सूत्र बताते है कि बोर खनन का बिल वहीं लगा सकता है। जिसके पास बोरवेल की मशीन हो और पीएचई विभाग से अनुमति प्राप्त हो। लेकिन यहां हिच्छा पंचायत में सरपंच और सचिव और पटेल व्यापारी ने मिलकर बोर खनन की फ र्जी बिल लगा कर लाखों रुपए आहरण कर लिए अब देखना यह है कि खबर प्रकाशित होने के बाद अधिकारी क्या संज्ञान लेते है।

एक नजर

भारतीय जनता पार्टी प्रदेश के निर्देश पर जशपुर में त्रिदिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाजपा नेता सच्चितानंद उपासने का आगमन आज

जोहार छत्तीसगढ़-दुलदुला।

भारतीय जनता पार्टी प्रदेश के निर्देश पर जिला जशपुर में त्रिदिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला चल रहा है। जिसमें प्रतिदिन अलग-अलग विषयों पर अलग-अलग प्रशिक्षक वक्ताओं के द्वारा कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। 30 जून को कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण के लिए प्रदेश के जाने माने कद्दावर भाजपा नेता सच्चितानंद उपासने रायपुर का आगमन हो रहा है। जिससे कार्यकर्ताओं में काफी उत्साह देखने को मिल रहा है। चूंकि वे भाजपा नेता ही नहीं बल्कि आरएसएस के वरिष्ठ स्वयं सेवक भी है जिससे संघ क्षेत्र में भी काफी पकड़ रखते हैं और जशपुर क्षेत्र कई पुराने नये स्वयंसेवकों से पहचान भी उनका है जिससे इनका जशपुर प्रवास से काफी प्रभाव पड़ेगा। उपासने स्व.कुमार दिलीप सिंह जूदेव के सलाहकार के रूप में भी काफी समय तक काम किये हैं और बिलासपुर चुनाव के दौरान में कुमार साहब उपासने को ही अपना चुनावी कमान सौंपे थे और भारी मतों से विजय प्राप्त किये इस तरह से जशपुर राजपरिवार से भी काफी पुराने रिश्ता है कुल मिलाकर यह कहना ठीक होगा। कि जशपुर जिला में इनका प्रवास होना संगठन के लिए बहुत मायने रखता है निश्चित रूप से भाजपा को लाभ मिलने वाला है।

प्राकृतिक आपदा में जनहानि के 4 मामले में प्रभावित परिजन हेतु 16 लाख रुपए की राशि स्वीकृत

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुरनगर।

कलेक्टर रितेश कुमार अग्रवाल ने प्राकृतिक आपदा में जनहानि के 4 मामलों में प्रभावित परिजन हेतु आरबीसी 6.4 के तहत् 16 लाख रुपए की आर्थिक सहायता अनुदान राशि स्वीकृत की है। जिसमें सर्पदंश से फरसाबहार तहसील के ग्राम सुण्डरू निवासी निर्मला बरजो पति विजय बरजो की मृत्यु 02 जुलाई 2021 को हो जाने पर मृतक के निकटतम वरिस मृतिका के पति विजय बरजो हेतु 4 लाख, कांसाबेल तहसील के ग्राम बिहावल निवासी सुषमा पिता सुरेन्द्र राम की मृत्यु 14 अगस्त 2021 को हो जाने पर मृतिक के निकटतम वारिस मृतिका के पिता सुरेन्द्र राम हेतु 4 लाखए सन्ना तहसील के ग्राम लोढ़ेना निवासी भिनसु राम पिता सुखना राम की मृत्यु 27 फरवरी 2018 को हो जाने पर मृतक के निकटतम वारिस मृतक की पत्नी सोहरी हेतु 4 लाख एवं पत्थलगांव तहसील के ग्राम कर्राबेवरा निवासी धनमति पिता माखन राम की मृत्यु 4 अगस्त 2014 को हो जाने पर मृतिका के निकटतम वारिस मृतिका के पिता माखन राम हेतु 4 लाख रुपए की आर्थिक सहायता अनुदान राशि स्वीकृत की गई है।

कृषि मंडियों में भार साधक समितियों की नियुक्ति के आदेश जारी

अब तक अधिकारियों के जरिये हो रहा था कामकाज

राजनांदगांव। छत्तीसगढ़ की सभी 69 कृषि उपज मंडी समितियों में भार साधक अधिकारियों के स्थान पर भार साधक समितियों की नियुक्तियां कर दी गई हैं। प्रत्येक समिति में एक अध्यक्ष, एक उपाध्यक्ष तथा 5 सदस्यों समेत कुल 7 सदस्यों की नियुक्ति की गई है। संचालक कृषि विपणन रायपुर द्वारा इन भार साधक समितियों की नियुक्ति के आदेश जारी कर दिए गए हैं। भार साधक अधिकारियों के माध्यम से संचालित हो रहे कार्यों का संचालन अब समितियों के माध्यम से होगा।

राजनांदगांव जिला अंतर्गत कृषि उपज मंडी समिति खैरागढ़ की भारसाधक समिति में दशमत जंघेल को अध्यक्ष, महेश साहू को उपाध्यक्ष एवं प्रकाश जैन, जैतराम कोसरे, रामअवतार नेताम, गिरधारी पाल, तरूण साहू को सदस्य नियुक्त किया गया है। कृषि उपज मंडी समिति डोंगरगढ़ की भारसाधक समिति में मुरली वर्मा को अध्यक्ष, नरेश सिन्हा को उपाध्यक्ष एवं फिरंगी पटेल, गौकरण कोसले, प्रमोद वैष्णव, रमेश उईके, आशा मंडावी को सदस्य नियुक्त किया गया है। कृषि उपज मंडी समिति गंडई की भारसाधक समिति में संजू चंदेल को अध्यक्ष, जानकी मरावी को उपाध्यक्ष एवं किशुन मिरचे, फारूख मेमन, शत्रुघन चंदेल, प्रियंका जंघेल, रामानंद साहू को सदस्य नियुक्त किया गया है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक नारायण बाईन, द्वारा आसमा पब्लिसर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड,जयस्तंभ चौक रायपुर से मुद्रित कर मेडरमार कालोनी, जिला-रायगढ़ (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित।
संपादक -नारायण बाईन, फोन -फैक्स 07766299001, मो, 9479177711, 7489419194 Email-joharchhattisgarh@gmail.com, joharchhattisgarh@yahoo.co.in